अगस्त 2020, वर्ष 1 अंक 7 ● हिंदी मासिक समाचार पत्रिका ● 1816/J.A.III-2019 ● www.newsbucket.in ● मूल्य 10 रुपये /-

न्यूज़ बकेट

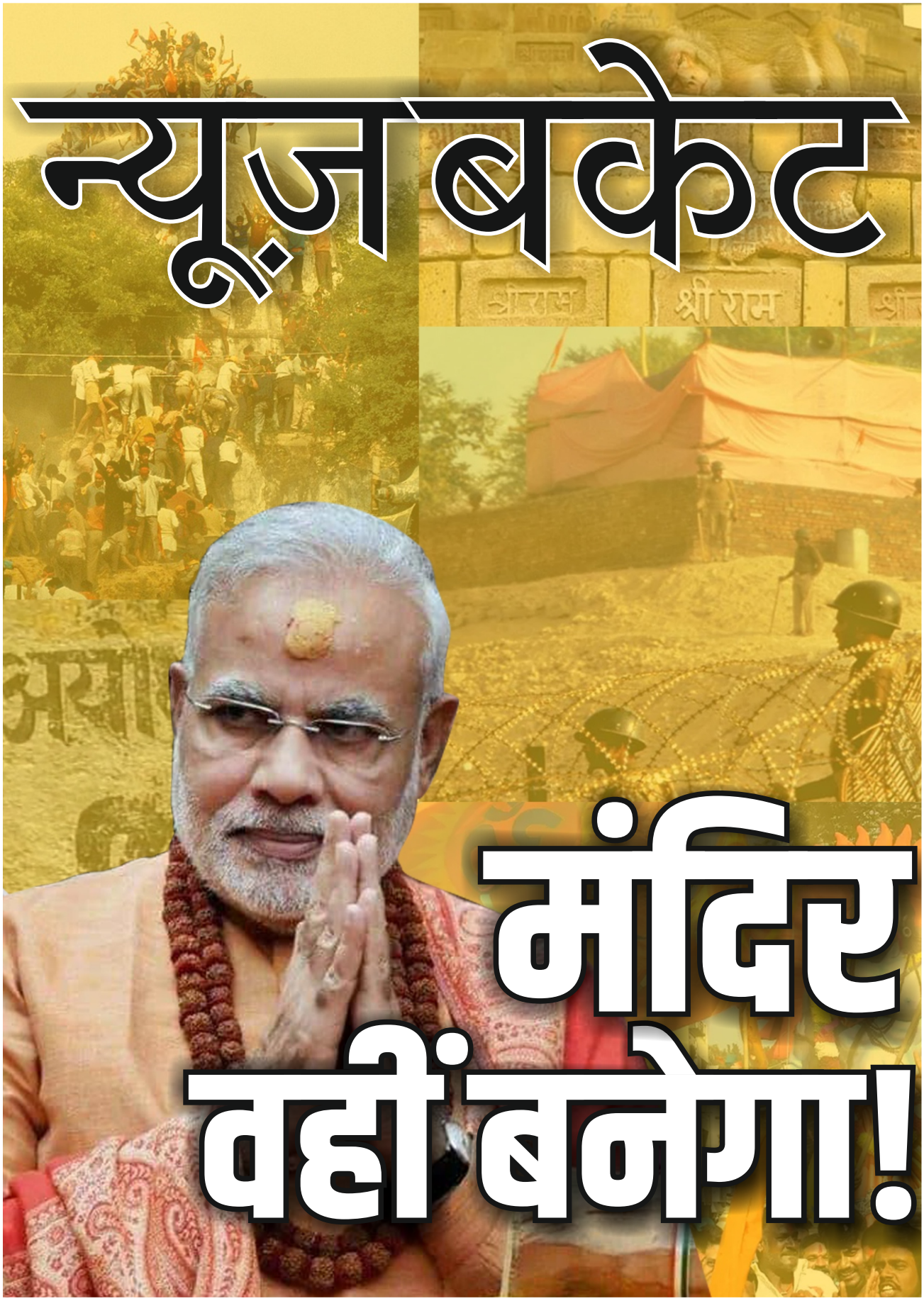

मंदिर वहीं बनेगा!

HOTEL UTSAV RESIDENCY

FACILITIES:

- Take the Charge & Control of or Centralized Air Conditioned Rooms.
- For good picture quality & clear visibility, enjoy our 32" LCD Television.
- 24 Hours Room Service.
- Doctor on Call.
- Laundry Services.
- Medical Centre.
- Free Wifi.

LOCATION:

BABA COMPLEX, BHU ROAD, LANKA, VARANASI

Email: hotelutsavresidency@gmail.com
Tel. 0542-2367080

BABA RESTAURANT

The Restaurant serves everything from traditional Indian, Chinese and Continental Cuisine dishes.

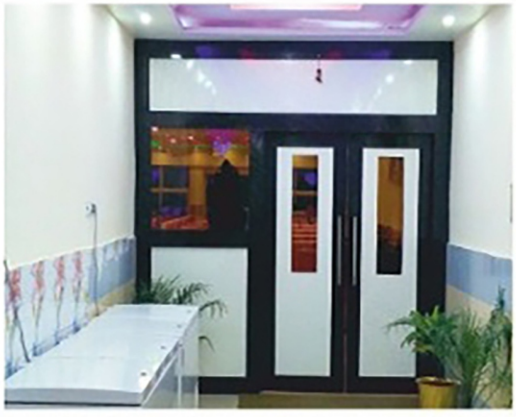

go mmt GROUP
make my trip | goibibo

भीतर

वर्क फ्रॉम होम की तर्ज पर चलती जिंदगी

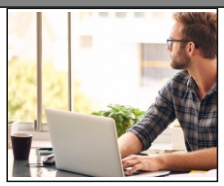

कोरोना महामारी में प्राइवेट कंपनियों से लेकर कई सरकारी कंपनियों और मीडिया सैक्टर के लगभग 70% कर्मचारी घर से ही काम कर रहे हैं। पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 06 पर...**

कारगिल के युद्ध को 21 साल हो चुके हैं। भारत ने 26 जुलाई 1999 को कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 07 पर...**

कारगिल विजय के 21 साल

सुशांत सिंह राजपूत की आखरी फिल्म ने तोड़े कई रिकॉर्ड

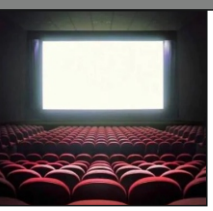

सुशांत सिंह राजपूत अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनकी आखिरी फिल्म 'दिल बेचारा' रिलीज हो चुकी है। फैन्स को सुशांत की इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार था। पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 23 पर...**

सम्पादकीय.....4
कवर स्टोरी.....5-9
विचार.....10-14
मुद्दा.....15-19
रिपोर्ट.....20-22
मनोरंजन.....23-26
शिक्षा जगत.....27-29
स्वास्थ्य.....30-31
साहित्य.....32-33
खेल.....34-35
गृहणी.....36-37
धार्मिक.....38
राशिफल.....39
खबर एक्सप्रेस.....40-45
पृष्ठो का शेष.....46

न्यूज़बकेट

www.newsbucket.in

अगस्त 2020

वर्ष 1 अंक 7

संस्थापक संरक्षक
संरक्षक : मिथिलेश पटेल
प्रधान संपादक : राजू श्रीवास्तव
कंटेंट एडिटर : विकास कुमार श्रीवास्तव
फोटो एडिटर : सुधीर कुमार गुप्ता
छायाकार : महेंद्र पटेल

कानूनी सलाहकार
भूपेश पाठक : **अधिवक्ता**
रवि प्रकाश तिवारी : **अधिवक्ता**

प्रधान कार्यालय (FIVE ALPHABETS)
बी - 31/19, आर बाबा शॉपिंग
काम्प्लेक्स लंका, वाराणसी।
E-Mail : m@fivealphabets.com
मो0 : 9415147110, 8574479280, 9807505429

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मिथिलेश पटेल एवं संपादक राजू श्रीवास्तव ने रॉयल प्रिंटिंग वर्क्स - C 25/2 राम कटोरा, चेतगंज, वाराणसी से मुद्रित कराकर बी - 31 /19, आर बाबा शॉपिंग काम्प्लेक्स लंका, वाराणसी से प्रकाशित किया।

पत्र संख्या - 1816/J.A.III-2019

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखक के हैं। उसमे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों का क्षेत्र वाराणसी न्यायालय होगा।

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का 13 वां संस्करण 19 सितंबर को संयुक्त अरब अमीरात में शुरू होगा और 8 नवंबर तक जारी रहेगा पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 34 पर...**

UAE में 19 सितंबर को शुरू होगा IPL 2020

देशव्यापी लॉकडाउन के कारण लगभग सभी स्कूल प्रबंधन ने छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षा पद्धति को अपनाया। भारतीय शिक्षा प्रणाली में यह नया प्रयोग है। पिछले करीब चार महीने से यह चल रहा है और इसके परिणाम भी कुछ कुछ दिखने शुरू हो गए हैं। तकनीकी रूप से कुछ व्यवधान के बावजूद बच्चों के शिक्षण को सतत क्रियाशील रखने के लिए ऑनलाइन शिक्षण पद्धति कोरोना संकट के निराशा भरे माहौल में एक आशा की किरण है, एक राहत भरी खबर है।

परंतु जब ऑनलाइन शिक्षण पद्धति का प्रयोग करते हुए चार-पांच महीने का अनुभव हो चुका है, इसमें इसके कुछ दुष्परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं या भविष्य में देखने को मिल सकते हैं। शिक्षण की इस नवीन पद्धति में सबसे बड़ा खतरा बच्चों का स्क्रीन टाइम बढ़ना है। अमेरिकन अकादमी ऑफ पीडियाटिक्स ने बच्चों के स्क्रीन टाइम पर एक शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसके अनुसार बच्चों का स्क्रीन टाइम सीमित रखें तथा खेलने या अन्य गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय दें।

आजकल दिन का एक बड़ा समय वे स्मार्टफोन पर खर्च करते हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि कोरोना संकट में ऑनलाइन शिक्षा की इस नवीन पद्धति से बच्चों की आंखों पर दुष्प्रभाव तो अवश्य ही पड़ेगा। इससे बच्चों को कुछ शारीरिक और मानसिक परेशानियां हो सकती हैं। सिर दर्द, आंखों में दर्द, नींद का ठीक से नहीं आना, चिड़चिडापन, एकाग्रता में कमी, उदासीनता जैसी परेशानियां बच्चों में हो सकती है। ऐसा भी देखा जा रहा है कि शिक्षण संस्थान अपने पाठ्यक्रम को पूरा करवाने के दबाव में ऑनलाइन शिक्षण की अवधि को बढ़ा भी दे रहे हैं।

ऑनलाइन शिक्षण की अवधि को बढ़ाना बच्चों की शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं है। हालांकि बाल मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि चूंकि ऑनलाइन शिक्षा ही वर्तमान समय में शिक्षण का एकमात्र विकल्प है, इसलिए फिलहाल यह आवश्यक है। बच्चों के स्क्रीन टाइम को संतुलित रखने के लिए उन्हें कुछ रचनात्मक कार्यो में संलग्न कराने पर विचार करना चाहिए। स्कूलों को हर क्लास के बाद कम से कम 15-20 मिनट का अवकाश देना चाहिए। इससे दिमाग व आंखों पर निरंतर पड़ने वाला दबाव काफी हद तक कम होगा। भारत सरकार ने भी इस मामले की गंभीरता को संज्ञान में लेते हुए इस मामले में हस्तक्षेप किया है।

जैसे-जैसे ऑनलाइन शिक्षा की गतिविधि आगे बढ़ती जाएगी, इसकी चुनौतियां भी सामने आती जाएंगी और फिर हम सभी इन चुनौतियों के समाधान भी तलाशते जाएंगे। लॉकडाउन के दिनों में अभिभावकों के लिए यह कार्य सरल था, परंतु अब सबकुछ खुल चुका है और अभिभावकों के लिए कई तरह की व्यावसायिक चुनौतियां बढ़े हुए रूपों में दस्तक दे रही होंगी। ऐसे में एक नए कार्य के लिए समय निकालना निश्चित ही मुश्किल होगा।

परंतु आज जब यह कटु सत्य विदित है कि कोरोना लंबे वक्त तक हमारे साथ रहने वाला है, तो ऑनलाइन शिक्षा को लेकर एक गंभीर विमर्श की जरूरत है। एक जैसी शिक्षा की सर्व-सुलभता, बच्चों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की चिंता, निजता व शांति के साथ पढ़ाई जैसी चुनौतियों को समझ व इनका समाधान कर के ही ऑनलाइन शिक्षा का सवरेत्तम लाभ उठाया जा सकता है।

-राजू श्रीवास्तव

अयोध्या विवाद: कब क्या कैसे हुआ?

अयोध्या में पांच सदी के बाद अब राम मंदिर का निर्माण होने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 5 अगस्त को अयोध्या जाकर राम मंदिर का भूमि पूजन करना तय हुआ।

क्या है अयोध्या विवाद?

अयोध्या विवाद एक राजनीतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक-धार्मिक विवाद है जो नब्बे के दशक में सबसे ज्यादा उभार पर था। इस विवाद का मूल मुद्दा राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद की स्थिति को लेकर है। विवाद इस बात को कर था कि क्या हिंदू मंदिर को ध्वस्त कर वहां मस्जिद बनाया गया या मंदिर को मस्जिद के रूप में बदल दिया गया।

बता दें कि बाबरी मस्जिद को एक राजनीतिक रैली के दौरान नष्ट कर दिया गया था, जो 6 दिसंबर 1992 को एक दंगे में बदल गया था। जो संगठन राम मंदिर के निर्माण का समर्थन कर रहे थे, उन्होंने 1992 के दिसंबर में एक कारसेवा का आयोजन किया, वे राम मंदिर के निर्माण में श्रमदान के लिए संगठित हुए थे, बाद में इलाहाबाद उच्च न्यायालय में भूमि शीर्षक का मामला दर्ज किया गया था, जिसका फैसला 30 सितंबर 2010 को सुनाया गया था।

फैसले में, तीन न्यायाधीशों इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने फैसला दिया कि अयोध्या की 2।77 एकड़ (1।12 हेक्टेयर) भूमि को तीन भागों में विभाजित किया जाएगा, जिसमें एक तिहाई राम लला या हिन्दू महासभा द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाना था, एक तिहाई सुन्नी वक्फ बोर्ड और शेष एक तिहाई निर्मोही अखाड़ा को दिया जाना था।

9 नवंबर, 2019 को, मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता में सर्वोच्च न्यायालय ने पिछले फैसले को हटा दिया और कहा कि भूमि सरकार के कर रिकॉर्ड के अनुसार है। इसने हिंदू मंदिर के निर्माण के लिए भूमि को एक ट्रस्ट को सौंपने का आदेश दिया। इसने सरकार को मस्जिद बनाने के लिए सुन्नी वक्फ बोर्ड को वैकल्पिक 5 एकड़ जमीन देने का भी आदेश दिया। इसके साथ ही पीएम ने घोषणा की कि सरकार द्वारा अधिग्रहित 67 एकड़ जमीन भी ट्रस्ट को दी जाएगी।

पिछले पांच सदी से यह विवाद था, जिसने देश की राजनीतिक दशा और दिशा को बदल दिया है। आजादी के बाद से अबतक इस विवाद ने देश की राजनीति को प्रभावित किया है। अयोध्या को लेकर देश भर में आंदोलन किए गए, कानूनी लड़ाई भी लड़ी गई और सुप्रीम कोर्ट के जरिए राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। अब जाकर मंदिर निर्माण का काम शुरू होता दिख रहा है।

आइये जानते हैं, अयोध्या विवाद में कब-क्या हुआ?

1528-29: मंदिर तोड़कर क्या मस्जिद बनवाई?

मुगल राजा बाबर के सेनापति मीर बाकी ने यहां मस्जिद बनवाई थी, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना जाता था। बाबर 1526 में भारत आया। 1528 तक उसका साम्राज्य अवध (वर्तमान अयोध्या) तक पहुंच गया। इसके बाद करीब तीन सदियों तक के इतिहास की जानकरी किसी भी ओपन सोर्स पर मौजूद नहीं है।

1853: जब पहली बार अयोध्या में दंगे हुए थे।

अयोध्या में इस मुद्दे को लेकर हिंदू-मुस्लिम हिंसा की पहली घटना 1853 में हुई थी। जब निर्मोही अखाड़े ने ढांचे पर दावा करते हुए कहा कि जिस स्थल पर मस्जिद खड़ी है। वहां एक मंदिर हुआ करता था।

जिसे बाबर के शासनकाल में नष्ट किया गया। अगले 2 सालों तक इस मुद्दे को लेकर अवध में हिंसा भड़कती रही। फैजाबाद जिला गजट 1905 के अनुसार 1855 तक, हिंदू और मुसलमान दोनों एक ही इमारत में पूजा या इबादत करते रहे।

1859: आजादी के पहले आंदोलन के बाद ब्रिटिश शासकों ने परिसर को बांटा।

लेकिन 1857 में आजादी के पहले आंदोलन के चलते माहौल थोड़ा ठंडा पड़ गया। 1859 में ब्रिटिश शासकों ने मस्जिद के सामने एक दीवार बना दी। परिसर के भीतरी हिस्से में मुसलमानों को और बाहरी हिस्से में हिंदुओं को प्रार्थना करने की अनुमति दी गई।

1885: पहली बार जिला अदालत में पहुंचा यह विवादित मामला।

मंदिर-मस्जिद विवाद कुछ सालों में इतना गंभीर और भयावह हो गया कि मामला पहली बार अदालत में गया। हिंदू साधु महंत रघुबर दास ने फैजाबाद कोर्ट में बाबरी मस्जिद परिसर में राम मंदिर बनवाने की इजाजत मांगी, हालांकि अदालत ने ये अपील ठुकरा दी। इसके बाद से मामला गहराता गया और सिलसिलेवार तारीखों का जिक्र मिलता है।

1934: दंगों में क्षतिग्रस्त हुई थी मस्जिद की दीवार और गुंबद।

इस साल फिर सांप्रदायिक दंगे हुए। इन दंगों में मस्जिद के चारों तरफ की दीवार और गुंबदों को नुकसान पहुंचा। ब्रिटिश सरकार ने इसका पुनर्निर्माण कराया।

1949: जब हिंदुओं ने कथित तौर पर मूर्ति स्थापित की, सरकार ने लगवाया ताला।

भगवान राम की मूर्ति मस्जिद में पाई गई। कहा जाता है कि मस्जिद में भगवान राम की मूर्ति हिंदुओं ने रखवाई। मुसलमानों ने इस पर विरोध व्यक्त किया और मस्जिद में नमाज पढ़ना बंद कर दिया। फिर दोनों पक्षों ने लोगों ने अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। इसके बाद सरकार ने इस स्थल को विवादित घोषित कर ताला लगवा दिया।

1950: अदालत से भगवान राम की पूजा की इजाजत मांगी गई।

गोपाल सिंह विशारद ने फैजाबाद अदालत में अपील दायर कर भगवान राम की पूजा की इजाजत मांगी। महंत रामचंद्र दास ने मस्जिद में हिंदुओं द्वारा पूजा जारी रखने के लिए याचिका लगाई। इसी दौरान मस्जिद को 'ढांचे' के रूप में संबोधित किया गया।

1959-61: दोनों पक्षों ने विवादित स्थल के हक के लिए मुकदमा किया।

1959 में निर्मोही अखाड़े ने विवादित स्थल के हस्तांतरण के लिए मुकदमा किया। वहीं, मुसलमानों की तरफ से उत्तर प्रदेश सुन्नी वक्फ बोर्ड ने भी बाबरी मस्जिद पर मालिकाना हक के लिए मुकदमा कर दिया।

1984: रामजन्मभूमि मुक्ति समिति का गठन किया गया।

विश्व हिंदू परिषद ने भगवान राम के जन्मस्थल को मुक्त करने और वहां राम मंदिर बनाने के लिए एक समिति का गठन किया। उसी समय गोरखपुर को गोरखनाथ धाम के महंत अवैद्यनाथ ने राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति बनाई। अवैद्यनाथ ने अपने शिष्यों और लोगों से कहा था कि उसी पार्टी को वोट देना जो हिंदुओं के पवित्र स्थानों को मुक्त कराए। बाद में इस अभियान का नेतृत्व भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी ने संभाल लिया।

फरवरी 1986: ताला खोलने का आदेश, बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी बनी।

जिला मजिस्ट्रेट ने हिंदुओं को प्रार्थना करने के लिए विवादित स्थल के दरवाजे से ताला खोलने का आदेश दिया। मुसलमानों ने इसके विरोध में बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति/बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी बनाई।

जून 1989: विश्व हिंदू परिषद ने राम मंदिर का शिलान्यास किया।

भारतीय जनता पार्टी ने इस मामले में विश्व हिंदू परिषद को औपचारिक समर्थन दिया। वीएचपी नेता देवकीनंदन अग्रवाल ने रामलला की तरफ से मंदिर के दावे का मुकदमा किया। नवंबर में मस्जिद से थोड़ी दूर पर राम मंदिर का शिलान्यास किया गया।

सितंबर 1990: आडवाणी की रथ यात्रा बिहार में रोकी गई, गिरफ्तार हुए।

भाजपा के तत्कालीन अध्यक्ष लाल कृष्ण आडवाणी ने गुजरात के सोमनाथ से उत्तर प्रदेश के अयोध्या तक रथ यात्रा निकाली ताकि हिंदुओं को इस महत्वपूर्ण मुद्दे से अवगत कराया जा सके। हजारों कार सेवक अयोध्या में जमा हुए। इसके नतीजे में गुजरात, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश में दंगे भड़क गए। ढेरों इलाके कर्फ्यू की चपेट में आ गए। 23 अक्टूबर को बिहार में तत्कालीन सीएम लालू प्रसाद यादव ने आडवाणी की रथ यात्रा रुकवा कर उन्हें गिरफ्तार करवा लिया। लेकिन मंदिर निर्माण के लिए देशभर से लाखों ईंटें अयोध्या भेजी गईं। इसके बाद भाजपा ने तत्कालीन प्रधानमंत्री वीपी सिंह की सरकार से समर्थन वापस ले लिया।

30 अक्टूबर 1990: अयोध्या में पहली बार कारसेवा हुई और गोलीकांड भी।

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के लिए पहली बार कारसेवा हुई थी। कारसेवकों ने मस्जिद पर चढ़कर झंडा फहराया था। इसके बाद पुलिस की गोलीबारी में पांच कारसेवकों की मौत हो गई थी। गोली चलाने का आदेश मुलायम सिंह यादव की सरकार ने दिया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री ने विवाद सुलझाने का प्रयास भी किया लेकिन सफलता नहीं मिली।

6 दिसंबर 1992: बाबरी मस्जिद ढहा दी गई, देश में दंगे शुरू।

30-31 अक्टूबर 1992 को धर्मसंसद में कारसेवा की घोषणा की गई। नवंबर में यूपी के सीएम कल्याण सिंह ने अदालत में मस्जिद की हिफाजत करने का हलफनामा दिया। इसे विवाद में ऐतिहासिक दिन के तौर पर याद रखा जाता है, इस रोज हजारों की संख्या में कारसेवकों ने अयोध्या पहुंचकर बाबरी मस्जिद ढहा दी। अस्थाई राम मंदिर बना दिया गया। इसके बाद ही पूरे देश में चारों ओर सांप्रदायिक दंगे होने लगे। इसमें करीब 2000 लोग मारे गए।

16 दिसंबर 1992: मस्जिद ढहाने की जांच के लिए लिब्रहान आयोग बना।

मस्जिद को ढहाने के मामले को लेकर लिब्रहान आयोग बनाया गया। जज एमएस लिब्रहान के नेतृत्व में जांच शुरू की गई।

1994: इलाहाबाद हाईकोर्ट में केस शुरू हुआ।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ में बाबरी मस्जिद विध्वंस से संबंधित केस चलना शुरू हुआ।

सितंबर 1997: मस्जिद ढहाने को लेकर 49 लोग दोषी करार दिए गए।

बाबरी मस्जिद ढहाए जाने की सुनवाई कर रही विशेष अदालत ने इस मामले में 49 लोगों को दोषी करार दिया। इसमें भारतीय जनता पार्टी के कुछ प्रमुख नेताओं के नाम भी थे।

2001: विश्व हिंदू परिषद ने राम मंदिर बनाने की तारीख तय की।

बाबरी मस्जिद विध्वंस की बरसी पर तनाव बढ़ गया। विश्व हिंदू परिषद ने कहा कि मार्च 2002 को अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण कराया जाएगा।

जनवरी-फरवरी 2002: वाजपेयी ने मामला सुलझाने के लिए अधिकारी नियुक्त किया, गोधरा कांड हुआ।

अयोध्या विवाद सुलझाने के लिए प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने अयोध्या समिति का गठन किया। वरिष्ठ अधिकारी शत्रुघ्न सिंह को हिंदू और मुसलमान नेताओं के साथ बातचीत के लिए नियुक्त किया गया। भाजपा ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए अपने घोषणापत्र में राम मंदिर निर्माण के मुद्दे को शामिल करने से इनकार कर दिया। विश्व हिंदू परिषद ने 15 मार्च से राम मंदिर निर्माण कार्य शुरू करने की घोषणा कर दी। सैकड़ों हिंदू कार्यकर्ता अयोध्या में इकठ्ठा हुए। फरवरी अयोध्या से लौट रहे हिंदू कार्यकर्ता जिस रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे थे उस पर गोधरा में हुए हमले में 58 कार्यकर्ता मारे गए।

13 मार्च 2002: सुप्रीम कोर्ट ने कहा अयोध्या में यथास्थिति बरकरार रखें।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि अयोध्या में यथास्थिति बरकरार रखी जाएगी। किसी को भी सरकार द्वारा अधिग्रहित जमीन पर शिलापूजन की अनुमति नहीं होगी। केंद्र सरकार ने कहा कि अदालत के फैसले का पालन किया जाएगा।

15 मार्च 2002: सरकार को सौंपी गई शिलाएं।

विश्व हिंदू परिषद और केंद्र सरकार के बीच इस बात पर समझौता हुआ कि विहिप के नेता सरकार को मंदिर परिसर से बाहर शिलाएं सौंपेंगे। रामजन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष महंत परमहंस रामचंद्र दास और विहिप के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक सिंघल के नेतृत्व में लगभग 800 कार्यकर्ताओं ने सरकारी अधिकारी को अखाड़े में शिलाएं सौंपीं।

अप्रैल 2002: हाईकोर्ट में मालिकाना हक को लेकर सुनवाई शुरू की।

हाईकोर्ट के तीन जजों की पीठ ने अयोध्या के विवादित स्थल पर मालिकाना हक को लेकर सुनवाई आरंभ की।

मार्च-अगस्त 2003: पुरातत्व विभाग ने विवादित स्थल के नीचे खुदाई की।

हाई कोर्ट के निर्देश पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने अयोध्या में खुदाई की। पुरातत्वविदों ने कहा कि मस्जिद के नीचे मंदिर से मिलते-जुलते अवशेष के प्रमाण मिले हैं। हालांकि इसे लेकर भी अलग-अलग मत थे। केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से विवादित स्थल पर पूजापाठ की अनुमति देने का अनुरोध किया, जिसे ठुकरा दिया गया।

मई 2003: सीबीआई ने आडवाणी समेत 8 लोगों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया।

सीबीआई ने 1992 में अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिराए जाने के मामले में उप-प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी सहित आठ लोगों के खिलाफ पूरक आरोप पत्र दाखिल किए।

जून 2003: शंकराचार्य ने मध्यस्थता का प्रयास किया, पर विफल।

कांची पीठ के शंकराचार्य ने जयेंद्र सरस्वती ने मामला सुलझाने के लिए मध्यस्थता की। उन्होंने उम्मीद जताई थी कि एक महीने में इस मामले का हल निकाल लिया जाएगा। लेकिन ऐसा कुछ हो नहीं पाया।

अगस्त 2003: मंदिर निर्माण के लिए विशेष विधेयक लाने का प्रस्ताव ठुकराया।

भाजपा नेता और उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने विहिप के इस अनुरोध को ठुकराया कि राम मंदिर बनाने के लिए विशेष विधेयक लाया जाए।

अप्रैल-जुलाई 2004: आडवाणी ने अस्थाई मंदिर में पूजा की।

आडवाणी ने अयोध्या में अस्थाई राम मंदिर में पूजा की और कहा कि मंदिर का निर्माण जरूर किया जाएगा। जुलाई में शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे ने सुझाव दिया कि विवादित स्थल पर मंगल पांडे के नाम पर कोई राष्ट्रीय स्मारक बना दिया जाए।

जनवरी-जुलाई 2005: आडवाणी अदालत में तलब, अयोध्या में आतंकी हमला।

लालकृष्ण आडवाणी को अयोध्या में छह दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद के विध्वंस में उनकी कथित भूमिका के मामले में अदालत में तलब किया गया। इसी साल जुलाई में अयोध्या के राम जन्मभूमि परिसर में आतंकी हमले हुए, जिसमें पांचों आतंकियों सहित छह लोग मारे गए। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बाबरी मस्जिद गिराए जाने के दौरान भड़काऊ भाषण देने के मामने

में आडवाणी को तलब किया। इससे पहले उन्हें बरी कर दिया गया था। 28 जुलाई को आडवाणी इसी मामले में रायबरेली की एक अदालत में पेश हुए। कोर्ट ने उनके खिलाफ आरोप तय किए।

4 अगस्त 2005: चार लोग न्यायिक हिरासत में भेजा।

फैजाबाद की अदालत ने अयोध्या के विवादित परिसर के पास हुए हमले में कथित रूप से शामिल चार लोगों को न्यायिक हिरासत में भेजा।

20 अप्रैल 2006: सरकार ने लिब्रहान आयोग से कहा- यह मिलीभगत थी।

कांग्रेस के नेतृत्ववाली यूपीए सरकार ने लिब्रहान आयोग के समक्ष लिखित बयान में आरोप लगाया कि बाबरी मस्जिद को ढहाया जाना सुनियोजित षड्यंत्र का हिस्सा था। इसमें भाजपा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, बजरंग दल और शिवसेना की मिलीभगत थी।

जुलाई 2006: बुलेटप्रूफ कांच का घेरा बनाने का प्रस्ताव खारिज।

सरकार ने अयोध्या में विवादित स्थल पर बने अस्थाई राम मंदिर की सुरक्षा के लिए बुलेटप्रूफ कांच का घेरा बनाए जाने का प्रस्ताव किया। इस प्रस्ताव का मुस्लिम समुदाय ने विरोध किया और कहा कि यह अदालत के उस आदेश के ख़िलाफ़ है जिसमें यथास्थिति बनाए रखने के निर्देश दिए गए थे।

19 मार्च 2007: राहुल गांधी बोले- नेहरू-गांधी परिवार का पीएम होता तो मस्जिद न गिरती।

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने चुनावी दौरे के बीच कहा कि अगर नेहरू-गांधी परिवार का कोई सदस्य प्रधानमंत्री होता तो बाबरी मस्जिद न गिरी होती। उनके इस बयान पर पूरे देश की राजनीतिक हलकों में तीखी प्रतिक्रिया हुई थी।

30 जून-नवंबर 2009: लिब्रहान आयोग ने रिपोर्ट पीएम मनमोहन सिंह को सौंपी।

बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के मामले की जांच के लिए गठित लिब्रहान आयोग ने 17 वर्षों के बाद अपनी रिपोर्ट प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को सौंपी। इसी साल, 7 जुलाई को उत्तर प्रदेश सरकार ने एक हलफनामे में स्वीकार किया कि अयोध्या विवाद से जुड़ी 23 जरूरी फाइलें सचिवालय से गायब हो गई हैं। 24 नवंबर को लिब्रहान आयोग की रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों में पेश। आयोग ने अटल बिहारी वाजपेयी और मीडिया को दोषी ठहराया। नरसिंहराव को क्लीन चिट दी।

20 मई 2010: हाईकोर्ट में पुनरीक्षण याचिका खारिज हो गई।

बाबरी विध्वंस के मामले में लालकृष्ण आडवाणी और अन्य नेताओं के खिलाफ आपराधिक मुकदमा चलाने को लेकर दायर पुनरीक्षण याचिका हाईकोर्ट में खारिज हो गई।

26 जुलाई 2010: अयोध्या विवाद पर हाईकोर्ट में सुनवाई पूरी हुई।

सितंबर 2010: 8 सितंबर को हाईकोर्ट ने अयोध्या विवाद पर 24 सितंबर को फैसला सुनाने की घोषणा की। 28 सितंबर को हाईकोर्ट ने फैसला टालने की अर्जी खारिज की।

30 सितंबर 2010: कोर्ट का फैसला- तीन हिस्सों में बांट दिया गया विवादित स्थल।

इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ पीठ ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया। इसके तहत विवादित जमीन को तीन हिस्सों में बांटा दिया गया। इसमें एक हिस्सा राम मंदिर, दूसरा सुन्नी वक्फ बोर्ड और निर्मोही अखाड़े को मिला।

9 मई 2011: सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले पर रोक लगाई।

सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर रोक लगाई। हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ 14 अपील दाखिल हुई।

मार्च-अप्रैल 2017: 21 मार्च को सुप्रीम कोर्ट ने आपसी सहमति से विवाद सुलझाने की बात कही। सुप्रीम कोर्ट ने बाबरी मस्जिद गिराए जाने के मामले में लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती सहित बीजेपी और आरएसएस के कई नेताओं के खिलाफ आपराधिक केस चलाने का आदेश दिया।

नवंबर-दिसंबर 2017: रिजवी बोले- विवादित स्थल पर राम मंदिर बने।

8 नवंबर को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात के बाद शिया वक्फ बोर्ड के चेयरमैन वसीम रिजवी ने बड़ा बयान दिया था। रिजवी ने कहा कि अयोध्या में विवादित स्थल पर राम मंदिर बनना चाहिए, वहां से दूर हटके मस्जिद का निर्माण किया जाए। 16 नवंबर को आध्यात्मिक गुरु श्रीश्री रविशंकर ने मामले को सुलझाने के लिए मध्यस्थता करने की कोशिश की, उन्होंने कई पक्षों से मुलाकात की। सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने 8 फरवरी तक सभी दस्तावेजों को पूरा करने के लिए कहा।

फरवरी-जुलाई 2018: नियमित सुनवाई की अपील खारिज।

8 फरवरी को सुन्नी वक्फ बोर्ड की तरफ से पक्ष रखते हुए वरिष्ठ वकील राजीव धवन ने सुप्रीम कोर्ट से मामले पर नियमित सुनवाई करने की अपील की। लेकिन पीठ ने उनकी

अपील खारिज कर दी। राजीव धवन ने कोर्ट से मांग की कि साल 1994 के इस्माइल फारूकी बनाम भारतीय संघ के फैसले को पुर्नविचार के लिए बड़ी बेंच के पास भेजा जाए। सुप्रीम कोर्ट ने राजीव धवन की अपील पर फैसला सुरक्षित रखा।

27 सितंबर 2018: 'मस्जिद इस्लाम का अनिवार्य अंग नहीं' मामला बड़ी बेंच को भेजने से इनकार।

कोर्ट ने इस्माइल फारूकी बनाम भारतीय संघ के 1994 का फैसला, जिसमें कहा गया था कि 'मस्जिद इस्लाम का अनिवार्य अंग नहीं' को बड़ी बेंच को भेजने से इनकार करते हुए कहा था कि अयोध्या में राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद में दीवानी वाद का निर्णय साक्ष्यों के आधार पर होगा और पूर्व का फैसला सिर्फ भूमि आधिग्रहण के केस में ही लागू होगा।

29 अक्टूबर 2018: सुप्रीम कोर्ट ने मामले की जल्द सुनाई पर इनकार करते हुए केस जनवरी 2019 तक के लिए टाल दिया।

24 नवंबर 2018: शिवसेना का अयोध्या में कार्यक्रम हुआ।

अयोध्या में शिवसेना ने कार्यक्रम किया। इस सभा के दौरान उद्धव ठाकरे ने अपने भाषण में बीजेपी को जमकर खरी-खोटी सुनाई। उन्होंने मोदी सरकार की तुलना कुंभकरण से करते हुए कहा कि मैं यहां कोई लड़ाई लड़ने नहीं आया हूं। आज तो मैं सिर्फ सोए हुए कुंभकरण को जगाने आया हूं। कुंभकरण 6 महीने सोते थे, आज के कुंभकरण पिछले 4 सालों से सोए हुए हैं। मैं उनको जगाने आया हूं। जो वादा करते हैं, जो वचन देते हैं, उसे निभाना चाहिए। चलो सब लोग मिलकर मंदिर बनाते हैं।

25 नवंबर 2018: विश्व हिंदू परिषद की अगुवाई में धर्म सभा हुई।

अयोध्या में विश्व हिंदू परिषद की अगुवाई में धर्म सभा हुई। धर्म सभा में हिंदू संत रामभद्राचार्य ने कहा कि बहुत जल्द ही भव्य राम मंदिर का निर्माण करना होगा। बीजेपी पर आरोप लगाया कि पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव की वजह से तारीख का ऐलान नहीं किया जा रहा है। इसके साथ ही विश्व हिंदू परिषद का कहना था कि अब करो या मरो का वक्त है, देश का बहुसंख्यक समाज अब इस मामले का हल होते हुए देखना चाहता है।

1 जनवरी 2019: पीएम मोदी ने कहा- फैसला कानूनी प्रक्रिया पूरी होने के बाद।

पीएम नरेंद्र मोदी ने 2019 के अपने पहले इंटरव्यू में कहा कि अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के लिए अध्यादेश पर फैसला कानूनी प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही लिया जा सकता है। राम मंदिर पर अध्यादेश लाने के बारे पीएम ने कहा कि यह मामला सुप्रीम कोर्ट में है, और संभवतः अपने अंतिम चरण में है। उन्होंने कहा कि कानूनी प्रक्रिया पूरी होने दीजिए, इसके बाद जो भी सरकार की जिम्मेदारी होगी उसे पूरा किया जाएगा।

8 मार्च 2019: सुप्रीम कोर्ट ने मामले को मध्यस्थता के लिए भेजा। पैनल को 8 सप्ताह के अंदर कार्यवाही खत्म करने को कहा।

अगस्त 2019: मध्यस्थता पैनल समाधान निकालने में विफल रहा।

1 अगस्त को मध्यस्थता पैनल ने रिपोर्ट प्रस्तुत की। 2 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मध्यस्थता पैनल मामले का समाधान निकालने में विफल रहा। 6 अगस्त से सुप्रीम कोर्ट में अयोध्या मामले की रोजाना सुनवाई शुरू हुई।

16 अक्टूबर 2019: सुप्रीम कोर्ट में अयोध्या मामले में सुनवाई पूरी करते हुए फैसला सुरक्षित रखा। चीफ जस्टिस रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली 5 सदस्यीय संविधान पीठ ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के सितंबर, 2010 के फैसले के खिलाफ दायर अपीलों पर 6 अगस्त से रोजाना 40 दिन तक सुनवाई की। इस दौरान विभन्न पक्षों ने अपनी अपनी दलीलें पेश कीं।

09 नवंबर 2019: राम मंदिर पर सबसे बड़ा फैसला।

सुप्रीम कोर्ट ने राम मंदिर-बाबरी मस्जिद विवाद पर अपना फैसला सुनाया। इसके तहत कोर्ट ने 2।77 एकड़ विवादित जमीन को राम लला विराजमान को देने का आदेश दिया। साथ ही मस्जिद के लिए अलग से पांच एकड़ जमीन सुन्नी वक्फ बोर्ड को देने का फैसला सुनाया। कोर्ट ने सरकार को मंदिर निर्माण के लिए तीन माह के भीतर एक ट्रस्ट बनाने का आदेश भी दिया था।

05 फरवरी 2020: राम मंदिर निर्माण के लिए ट्रस्ट का ऐलान।

राम मंदिर निर्माण के लिए पीएम मोदी ने संसद में 15 सदस्यीय श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का ऐलान किया। सुप्रीम कोर्ट ने मंदिर के पक्ष में फैसला दिया था और तीन महीने के अंदर ट्रस्ट बनाने की मियाद तय की थी। मोदी सरकार ने ट्रस्ट को कैबिनेट की मंजूरी दिलाने के बाद बिल संसद में पेश किया।

19 फरवरी 2020: राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की पहली बैठक हुई। महंत नृत्यगोपाल दास को ट्रस्ट का अध्यक्ष चुना गया, जबकि VHP नेता चंपत राय को महामंत्री बनाया गया। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पूर्व प्रधान सचिव नृपेंद्र मिश्रा भवन निर्माण समिति के चेयरमैन नियुक्त किए गए। ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंद गिरी बने। **शेष पेज न. 46 पर**

वर्क फ्रॉम होम की तर्ज पर चलती जिंदगी

शिवानी गुप्ता

कोरोना महामारी में प्राइवेट कंपनियों से लेकर कई सरकारी कंपनियों और मीडिया सैक्टर के लगभग 70% कर्मचारी घर से ही काम कर रहे हैं। सही समय पर काम ना कर पाने की स्थिति में कर्मचारियों को इस दौरान अपने बॉस की खरी खोटी सुनने को मिल रही है , इसके अलावा इंटरनेट की वजह से भी घर से काम कर रहे लोगों को अपने वर्किंग आवर से ज्यादा काम करना पड़ रहा है।

वर्क फ्रॉम होम में तो ऑफिस से भी ज्यादा और अधिक काम करना पड़ रहा है लेकिन इससे अब परिवार के अन्य सभी लोगों को पता चल रहा है कि ऑफिस में काम कितना होता है। पहले 10:00 बजे निकल जाते थे और शाम को आते थे लेकिन वर्क फ्रॉम होम में समय की पाबंदी को ताक पर रखकर लोगों से कंपनियां काम करवा रही हैं।

कई लोग अपनी पेशेवर और निजी जिंदगी को अलग-अलग रखना चाहते हैं हालाकि वर्क फ्रॉम होम में यह संभव नहीं हो पा रहा है इसके अलावा लोगों को घर से काम करने का खामियांजा छुट्टी वाले दिन काम करके भरना पढ़ रहा है। ऑफिस में लोगों को 8 से 9 घंटे काम करते हुए कई प्रकार के एक्टिविटीज के साथ गुजरना पड़ता था लेकिन घर में लोगों को किसी कोने में ऑफिस के काम में बिजी रहना पड़ रहा है।

इसके साथ ही घर के कामों पर भी लोग ध्यान दे रहे हैं ऐसे लोगों की परेशानियां और बढ़ गई है खासकर महिलाओं के लिए घर से काम करना काफी चुनौती पूर्ण हो गया है महिलाओं को घर के काम के साथ-साथ ऑफिस का भी काम समय से मैनेज करना पड़ रहा है ऑफिस में काम करने की एक शिफ्ट होती है लेकिन जब से वह घर में काम कर रहे हैं तब से शिफ्ट से ज्यादा काम कर रहे हैं 9 घंटे की जगह घर से काम करने में लोग अब 11 , 12 घंटे काम कर रहे हैं घर से काम करने में लोगों को अब हर समय खुद को प्रूव करना पड़ रहा है कि वे काम कर रहे हैं और काम पर एक्टिव है ऑफिस में काम करने का फायदा यह था कि ऑफिस में 8 घंटे काम के दौरान अलग-अलग लोगों से मिलना जुलना होता था लोगों की ऑफिस में दोस्तों के साथ चाय पर चर्चा होती थी लेकिन अब वर्क फ्रॉम होम करने से नहीं हो पा रही हैं अब बस लोग घर के एक कोने में बैठ कर अपने दफ्तर का काम करने को मजबूर है घर से काम करने के दौरान लोग घर की चारदीवारी में सिमट कर रह गए हैं घर से काम करने में व्यक्ति ना खुद को ना अपने दोस्तों को और ना ही अपने परिवार जन को समय दे पा रहे हैं जिससे सोशल लाइफ के खत्म होने का डर होना लाजमी है घर से काम करते हुए लोग का वर्क लोड पहले से ज्यादा बढ़ गया है जिससे की मानसिक तौर पर लोगों का प्रेशर काफी बढ़ गया है इन दिनों कोरोना महामारी की वजह से लोगों को घर से 12 से 15 घंटे काम करना पड़ता है कभी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग पर तो कभी फोन पर को ऑर्डिनेंट करना पड़ रहा है यही नहीं घर से काम के दौरान हर समय ऑनलाइन भी लोगों को रहना पड़ रहा है वर्क फ्रॉम होम के दौरान लोगों को टीम वर्क के साथ काम करने में दिक्कत आ रही है यूं कहें तो वर्क फ्रॉम होम लोगों के लिए दिन पर दिन मानसिक बीमारी और प्रताड़ना बनती जा रही हैं

प्रदेश सरकार की नेक पहल, काशी में प्रवासियों श्रमिकों को मिल रहा रोजगार

कोरोना काल में जिस तरीके से प्रवासी श्रमिक भारी संख्या में उत्तर प्रदेश में आए हुए हैं इसको देखते हुए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने रोजगार देने के लिए सभी मंडल के मंडल आयुक्त को इसकी जिम्मेदारी दी है।

श्रमिकों को उनके योग्यता के अनुसार से रोजगार देने की सरकार की मुहिम में वाराणसी के मंडलायुक्त ने एक कदम आगे बढ़कर चल रहे है।

काशी विश्वनाथ धाम के निर्माण में 700 मजदूरों को विश्वनाथ धाम के निर्माण के लिए राजगीर, मिस्त्री और हेल्पर के तौर पर लगाया गया हैं, जिससे समय सीमा पर विश्वनाथ धाम का कार्य पूरा हो सके और कोरोना काल में लोगों को रोजगार मिल सके।

वहीं वाराणसी राजकीय निगम के अंतर्गत जो भी विभाग आते हैं उन विभागों में जिस तरीके से मजदूरों की जरूरत हो, वहां पर लगाये जायेंगे।

इसी क्रम में वाराणसी में बन रहे नगर निगम का मिनी सदन जिसे रुद्राक्ष के आकार में बनाया जा रहा है उसमें भी भारी संख्या में मजदूरों को रोजगार मिला है।

तो वहीं विकास प्राधिकरण समेत कई ऐसे विभाग हैं जिनके निर्माण कार्य विकास कार्य चल रहे हैं, जहां पर लोगों को रोजगार मिलता नजर आ रहा है। हालांकि जो प्रदेश सरकार की चिंता है कि बाहर से आए हुए मजदूरों को नौकरी देने की, उस चिंता को खत्म करने के लिए मंडलायुक्त लगातार प्रयासरत है।

राफेल से घबराया चीन, दे रहा उल्टी सीधी प्रतिक्रिया

भारतीय सेना में राफेल के शामिल होते ही दुश्मन देशों ने शोर मचाना शुरू कर दिया है। राफेल के शामिल होने के कारण भारतीय वायु सेना मनोबल काफी बढ़ गया है। दुश्मनों के दांत खट्टे करने वाले राफेल को लेकर अलग अलग तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आ रही है।

एक ओर पाकिस्तान राफेल के भारत में शामिल होने के बाद विश्व समुदाय से गुहार लगा रहा है तो वहीं दूसरी ओर चीन अब अपने फाइटर विमान J-20 से राफेल की तुलना कर रहा है। चीन लगातार यह बताने की कोशिश कर रहा है कि उसका J-20 विमान राफेल से कई गुना बेहतर है हालांकि राफेल के मुकाबले चीन का J-20 फाइटर विमान कहीं नहीं ठहरता है।
ग्लोबल टाइम्स में चीन के विशेषज्ञों ने यह दावा किया है कि राफेल सुखोई-30 एमकेआई से बेहतर है जो भारतीय वायुसेना में बड़ी संख्या में मौजूद है लेकिन राफेल बहुत उन्नत नहीं है। चीन के सैन्य विशेषज्ञों ने यह दावा किया है कि J-20 जैसे फाइटर विमान का सामना करना राफेल के लिए बेहद ही मुश्किल होगा।

चीनी एक्सपर्ट्स के मुताबिक चीन का J-20 फाइटर जेट राफेल से बहुत अधिक सुपीरियर है। दरअसल राफेल के भारतीय वायुसेना में शामिल होने से दुश्मन देशों में खलबली मच गई है यही कारण है कि अब चीन राफेल की कमियां गिनाना शुरू कर रहा है। उन्होंने राफेल को तीसरी पीढ़ी का विमान बताया है और J-20 को चौथी पीढ़ी का।

इन सबके बीच पूर्व भारतीय वायु सेना प्रमुख बी.एस.धनोआ के अनुसार भी राफेल भी कहीं अधिक अत्याधुनिक है। उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि चीन के J-20 विमान को पांचवे जनरेशन का विमान है इसकी अपेक्षा कहीं अधिक खूबियां राफेल में है।

धनोआ ने ये भी सवाल उठाया था कि यदि चीन का J-20 फाइटर विमान फिफ्थ जनरेशन का है तो इसे सुपरक्रूज क्यों नहीं कर सकते! उन्होंने बताया कि सुपरक्रूज वो क्षमता है जिसमें किसी फाइटर जेट को एक मैक यानि ध्वनि की रफ्तार से बिना आफ्टरबर्नर्स के उड़ाया जा सकता है।

बिजली गिरने से 45 मिनट पहले ही मिल जाएगा अलर्ट

निमांषी पांडेय

बिहार में आसमानी बिजली गिरने के कारण 100 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी जिसके बाद बिहार सरकार काफी चौकन्नी हो गयी है और मौसम को लेकर अलर्ट जारी करने लग गयी है और बिहार के लोगों को बिजली से कैसे बचें इसके तरीके भी समझा रही है। बिहार सरकार की आपदा प्रबंधन टीम द्वारा इंद्रवज्र (Indravajra) नाम का एक मोबाइल एप लॉन्च कर दिया गया है जो काफी उपयोगी साबित हो सकता है। पहले बिजली गिरने से जो बिहार की जनता की मौतें होती थी अब इस एप्प के जरिये बचायी जा सके।

इस एप्प की सबसे ख़ास बात यह है की बिजली गिरने से 40-45 मिनट पहले ही यह लोगों को अलर्ट कर देगा। अलर्ट करने के लिए आपके स्मार्टफोन की रिंगटोन बजने लगेगी। बिहार सरकार ने राज्य के सभी लोगों से इस एप को अधिक-से-अधिक संख्या में डाउनलोड करने की अपील की है ताकि बिजली गिरने से होने वाली मौतों को रोका जा सके।

स्मार्टफोन में कैसे इंस्टॉल करें इंद्रवज्र एप?

1. आप इंद्रवज्र एप्प को गूगल-प्ले-स्टोर पर जा कर आसानी से डाउनलोड कर कर सकते है।

2. गूगल प्ले-स्टोर पर जाकर आपको सर्च बार में Indravajra टाइप करना होगा और फिर इसके बाद इसे डाउनलोड कर लें।

3. एप्प के डाउनलोड होने के बाद ये आपसे आपका मोबाईल नंबर मांगेगा फिर आपको अपने मोबाइल नंबर के जरिए इस पर रजिस्ट्रेशन करना होगा।

4. रजिस्ट्रेशन करने के बाद यह एप्प आपकी लोकेशन ट्रैक करने की परमिशन मांगेगा।

5. ये सारी प्रक्रिया के बाद यह एप्प काम करना शुरू कर देगा और आपको आपके लोकेशन के 20 किलोमीटर के दायरे में बिजली गिरने से 40-45 मिनट पहले अलर्ट देगा।

6. अब तक इस एप्प को 1 लाख से अधिक लोगों ने डाउनलोड किया है और सरकार की अपील है की इस एप्प को ज्यादा से ज्यादा लोग डाउनलोड करे ताकि राज्य में बिजली गिरने से किसी की मौत न हो सके।

कारगिल विजय के 21 साल

कारगिल के युद्ध को 21 साल हो चुके हैं। भारत ने 26 जुलाई 1999 को कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। कारगिल युद्ध में भारत की जीत के बाद से हर साल 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन कारगिल युद्ध में शहीद हुए जवानों के सम्मान में मनाया जाता है। कारगिल युद्ध को ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है।

भारतीय सैनिकों ने कारगिल पर विजय हासिल कर वहां देश का झंडा लहराया था। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान के कब्ज़े वाली जगहों पर हमला किया और धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से पाकिस्तान को सीमा पार वापिस जाने को मजबूर किया। यह युद्ध ऊंचाई वाले इलाके पर हुआ और दोनों देशों की सेनाओं पर लड़ने में काफ़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था।

साल 1999, कारगिल की ऊंची चोटियों पर घात लगाकर बैठे पाकिस्तान के सैनिकों को यह अंदेशा ही नहीं था कि उनके ऊपर हवाई हमला भी हो सकता है। भारतीय वायुसेना के मिग 27 लड़ाकू विमानों ने आसमान से पाकिस्तानी सैनिकों पर आग बरसानी शुरू कर दी थी। वायुसेना के बहादुर जवानों ने पाक सेना के सप्लाई और पोस्ट पर इतनी सटीक और घातक बमबारी की जिससे उनके पांव उखड़ गए।

1700 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार और हवा से जमीन पर अचूक हमला करने में सक्षम इस रूसी लड़ाकू विमान को कारगिल के युद्ध के समय में पराक्रम दिखाने के लिए बहादुर नाम दिया गया था। इसका लड़ाकू विमान का खौफ पाकिस्तानियों के दिल और दिमाग पर ऐसा छाया कि उसने 'चुड़ैल' नाम दे डाला।

जब यह विमान जमीन की सतह के करीब उड़ता था तब उस समय कोई भी रडार बड़ी मुश्किल से इसकी पहचान कर पाता था। इसकी आवाज दुश्मनों के दिलों में खौफ पैदा कर देती थी। हालांकि भारतीय वायुसेना में अपने कई सालों के सफर के दौरान इस लड़ाकू विमान ने कई उतार-चढ़ाव देखें हैं।

मिग-27 वायुसेना की लड़ाकू टुकड़ी को 2006 से ही इसपर गर्व रहा है। मिग-23 बीएन, मिग-23 एमएफ और प्योर मिग-27 जैसे लड़ाकू विमान पहले ही सेवा से बाहर हो चुके हैं।

इन विमानों ने शांति और युद्ध दोनों के दौरान राष्ट्र के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है। भारतीय बेड़े ने कारगिल युद्ध के दौरान एक महत्वपूर्ण योगदान देते हुए दुश्मन के ठिकानों पर सीधा रॉकेट और बम से हमले किए थे।

हवा से जमीन पर सटीक निशाना लगाने में था माहिर

मिग अपने जमाने का सबसे बेहतरीन 27 लड़ाकू विमान हुआ करता था। यह हवा से जमीन पर निशाना लगाने में इतना माहिर था कि दुश्मन को भनक लगने से पहले ही उन्हें नेस्तनाबूत कर देता था। यह फाइटर जेट 1700 किलोमीटर प्रतिघंटे की उड़ान भरने की क्षमता रखता था। इसके अलावा यह चार हजार किलोग्राम के वॉरहेड को ले जा सकता था।

कारगिल युद्ध से जुड़ी 10 बड़ी बातें-

एक चरवाहे ने भारतीय सेना को कारगिल में पाकिस्तानी सेना की घुसपैठ कर और कब्जा जमा लेने की सूचना 3 मई 1999 को दी थी।

2. भारत ने एलओसी पर से पाकिस्तानी सैनिकों को खदेड़ने के लिए कारगिल सेक्टर में ऑपरेशन विजय अभियान चलाया था।

3. 26 जुलाई को भारत ने कारगिल युद्ध में जीत हासिल करि थी। कारगिल युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तान के 3 हजार सैनिकों को मार गिराया था। यह युद्ध 18 हजार फीट की ऊंचाई पर लड़ा गया था।

4. कारगिल युद्ध में भारत के 527 जवान शहीद हो गए थे और 1363 जवान घायल हुए थे।

5. बोफोर्स तोपें कारगिल के युद्ध के समय सेना के खूब काम आई थी।

6. भारतीय सेना को कारगिल के युद्ध में बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। पाकिस्तानी सैनिक ऊंची पहाड़ियों पर बैठे थे और हमारे सैनिकों को गहरी खाई में रहकर उनसे मुकाबला करना था। भारतीय जवानों को रात में चढ़ाई कर ऊपर पहुंचना पड़ रहा था जोकि बहुत जोखिमपूर्ण था।

7. भारतीय वायुसेना ने करगिल युद्ध में बड़ा योगदान दिया था। भारतीय वायुसेना ने 32 हजार फीट की ऊंचाई से एयर पावर का उपयोग किया था। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के खिलाफ मिग-27 और मिग-29 का भी इस्तेमाल किया और जहां भी पाकिस्तान ने कब्जा किया था वहां बम गिराए गए। साथ ही पाकिस्तान के कई ठिकानों पर आर-77 मिसाइलों से हमला किया गया था।

8. कारगिल युद्ध के समय में हमारे देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी थे।

9. कारगिल युद्ध की जीत की घोषणा तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजेपयी ने 14 जुलाई को की थी, लेकिन आधिकारिक तौर पर 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस की घोषणा की गई थी।

10. अटल बिहारी बाजपेई ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ बातचीत कर उन्हें लताड़ा था। उन्होंने नवाज शरीफ से कहा था कि मेरा लाहौर बुलाकर स्वागत करते हैं और उसके बाद कारगिल का युद्ध छेड़ देते हैं यह बहुत बुरा व्यवहार है।

पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़ के हालात – यूपी, बिहार और असम बेहाल

आरती पाण्डेय

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में मूसलाधार बारिश के कारण बाढ़ का माहौल हर साल बन जाता है। भारत में मानसून जून की शुरुआत से लेकर सितंबर महीने तक रहता है जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में जुलाई महीने के शुरुआत से धीरे-धीरे मानसून आना शुरू हो जाता है। इस साल मानसून जल्दी आ जाने के कारण बाढ़ का प्रकोप भी जल्दी देखने को मिला।

जून महीने के अंत से शुरू हुई बारिश जुलाई के आते-आते पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़ का खतरा बढ़ते दिखाई दे रहा था। 10 जुलाई तक असम और आसपास के इलाकों में तेजी से जलजमाव होने लगा। तेज बारिश के बाद ही ब्रह्मपुत्र नदी का जलस्तर बढ़ने के कारण पानी तेजी से फैलता है आज अधिकतर पूर्वोत्तर राज्यों में हर साल बाढ़ आ ही जाती है।

मूसलाधार बारिश और डूबते राज्य

राज्यों में 10 जुलाई से ही तेज बारिश के कारण बाढ़ क शुरू हो गया।,15 जुलाई तक 40 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हो चुके हैं। हजारों ने अपने घर खो दिए हजारों को दूसरी जगहों पर विस्थापित कर दिया गया। प्रभावित राज्यों में बिहार, यूपी, असम, मिजोरम, त्रिपुरा मुख्य है। 15 जुलाई तक 64 लोगों की मृत्यु हो चुकी है और 31 लोग लापता बताए जा रहे हैं जबकि 3186 परिवारों को दूसरी जगह पर भेजा गया है।

असम:

सालासर में मानसून जून के अंत तक शुरू हो गया 10 जुलाई तक बदतर हो चुकी थी। जब असम के 11 जिले बाढ़ से प्रभावित हो चुके थे। असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के मुताबिक 16,500 लोगों को विस्थापित कर 320 राहित शिविर में रखा गया है। राज्य में नदियां खतरे के जलस्तर से ऊपर बहने लग गई थी।

बिहार:

नदियों में पानी भर जाने के कारण बिहार में 12 जुलाई तक बाढ़ का प्रकोप आ चुका था। बिहार के जल संसाधन विभाग के मुताबिक राज्य के 12 जगहों पर नदियों के पानी खतरे के से ऊपर बहने लगी थी। इनमें कोसी, भागमती, कमला, गंडक मुख्य है। 14 जुलाई को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार राज्य का बेवरा लेने भी गए थे।

उत्तर प्रदेश:

उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा प्रभावित देवरिया जिला है। उत्तर प्रदेश में भी अब तक 15 लोगों की मृत्यु और 113 इमारते गिर चुकी है। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल वहां भी लोगों को बचाने की में जुड़ चुकी है।

त्रिपुरा और मिजोरम:

त्रिपुरा जैसे छोटे राज्य में भी अब तक 12000 लोग राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल द्वारा बचाए जा चुके हैं और 38 राहत शिविर में रखे गए हैं और अब तक एक व्यक्ति की मृत्यु का पता चल पाया है। मिजोरम में ख्वातलांगतुईपुई नदी के कारण लुंगलेई जिले में तकरीबन 3000 लोगों को राहत शिविरों में भेजा गया और 400 घर तबाह हो चुके जबकि अब तक दो लोगों की मरने की खबर आई है।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों का बुरा हाल: काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभ्यारण के अंदर 1055 वर्ग किलोमीटर में फैला एक विशाल चित्र जिसमें नाव में सवार फॉरेस्ट गार्ड खतरनाक बाढ़ के पानी में बहादुरी से डटे हुए हैं यहां रहने वाले जंगली जानवर और उन्हें शिकारियों से बचाने के लिए हर साल ब्रह्मापुत्र में पानी बढ़ जाने के कारण काजीरंगा में भी बाढ़ तेजी से आ जाता है। कई सारे जानवर अब तक मर चुके हैं।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान का तकरीबन 90% क्षेत्र अब तक जलमग्न हो चुका है। ऐसे में बचाव दल के लिए भी काम बहुत ही मुश्किल हो चुका है अब तक तकरीबन 100 से ज्यादा जानवर अपनी जान गवा चुके हैं।

जबकि काजीरंगा में जानवरों के लिए हर साल बाढ़ आवश्यक है लेकिन फिर भी इतना ज्यादा जलस्तर उनके लिए जानलेवा साबित हो रहा है। साल 2018 से बाढ़ की संख्या सामान्य से बहुत ज्यादा बढ़ जाने के कारण काजीरंगा खतरे से जूझ रहा है और साथ-साथ जानवरों का जीवन भी डूबता दिखाई देता है।

केंद्र सरकार द्वारा बाढ़ पीड़ितों के लिए मदद:

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बाढ़ पीड़ितों सहायता के लिए अथवा असम में और बाकी पूर्वोत्तर राज्यों में दक्षिण पश्चिम मानसून से बचने के लिए 346 करोड़ का प्रारंभिक राशि जारी करने के लिए कहां है।

शेष पेज न. 46 पर

राजस्थान का राजनीतिक घमासान की दास्तान – पायलट, गहलोत और गांधी परिवार

रवि पटेल

राजस्थान में 2018 के राज्य चुनावो में कांग्रेस की जीत के बाद यह एक चर्चा का विषय था कि मुख्यमंत्री पद पर कौन होगा? युवा नेता सचिन पायलट या पुराने और अनुभवी नेता अशोक गहलोत? देश के युवा सचिन पायलट के समर्थन में खड़े दिखे जबकि अनुभवी और बुजुर्ग लोगों का मानना था कि अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बनें। खबरों की मानें तो इस चुनाव के बाद कांग्रेस दो गुटों में बट चुकी थी। कुछ विधायक चाहते थे कि सचिन पायलट मुख्यमंत्री बनें जबकि कुछ अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री के रूप में देखना चाहते थे। कुछ ऐसी ही स्थिति मध्यप्रदेश में भी देखने को मिली थी जहां विधायक ज्योतिरादित्य सिंधिया और कमलनाथ के गुटों में बट चुके थे। राजस्थान में अंततः कांग्रेस कमेटी ने पुराने और अनुभवी नेता अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री के लिए चुना और सचिन पायलट राजस्थान के उपमुख्यमंत्री और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बनाए गए। लेकिन इसके बाद से ही दोनों नेताओं के बीच खटास और बढ़ गई और कहीं ना कहीं आज जो राजस्थान में हो रहा है वह उसी का नतीजा है।

आखिर क्यों शुरू हुई सत्ता की लड़ाई

यह सारा विवाद तब शुरू हुआ जब राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 11 जुलाई को भारतीय जनता पार्टी पर इल्जाम लगाते हुए यह कहा कि भाजपा एक कांग्रेसी विधायक को 25 करोड़ में खरीदना चाहती है और जो मध्यप्रदेश में हुआ उसी को दोहराने की साजिश चल रही है। यह बात आश्चर्यजनक नहीं थी क्योंकि ऐसी घटनाएं 2018 में कर्नाटक और हाल ही में मध्यप्रदेश में खुल के सामने आईं। दोनों राज्यों में कांग्रेस की सरकार गिरी और भाजपा अपनी सरकार बनाई। लेकिन राजस्थान के राजनीतिक संकट को सिर्फ भाजपा के नजरिए से देखना गलत होगा इसमें कांग्रेस पार्टी का भी मुख्य योगदान रहा है।

कांग्रेस पार्टी का आंतरिक मनमुटाव

2018 के चुनाव के बाद बाहर भले ही सब सही दिखने लगा हो लेकिन कांग्रेस पार्टी के अंदर राजस्थान में आपसी मनमुटाव कभी खत्म नहीं हुए। सचिन पायलट उपमुख्यमंत्री तो बन गए किंतु गहलोत की सरकार में उन्हें हमेशा से अनदेखा किया जाता रहा है राज्य के जो भी अहम मुद्दे थे उसमें उप मुख्यमंत्री के तौर पर उनकी राय तक नहीं ली जाती थी और 2019 में जब राजस्थान में कांग्रेस के 1 साल पूरे होने पर राज्य में हुए उपलयियों को बताते हुए राज्य की वार्षिक पुस्तिका में सचिन पायलट का जिक्र तक नहीं किया गया और देखते ही देखते 11 जुलाई को राजस्थान में कांग्रेस की सत्ता डगमगा गई।

ऑडियो टेप के पीछे की कहानी

11 जुलाई को विधायकों को बीजेपी द्वारा खरीदे जाने वाले बयान के बाद 11 जुलाई को ही राजस्थान के स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (SOG) दो लोगो को हिरासत में लिया। पुलिस को पता चला था की वह दोनों संदि भाजपा से जुड़े हैं और कांग्रेसी विधायकों को खरीदने की साजिश रच रहे हैं। उसी दिन सचिन पायलट और कुछ अन्य विधायकों को राजस्थान पुलिस ने नोटिस भेज कर इस मुद्दे पर अपने बयान देने को कहा। इसी के बाद सचिन पायलट द्वारा विद्रोह चालू हुआ वह अपने 10 से 15 विधायकों को लेकर एक हरियाणा के होटल में चले गए इसके बाद अटकलें लगाई जाने लगी कि सचिन पायलट वहां जाकर भाजपा के प्रेसिडेंट जेपी नड्डा से मिलेंगे और शायद वह भी ज्योतिरादित्य सिंधिया की तरह भाजपा से जुड़कर राजस्थान की सरकार गिराने की साजिश रच रहे हैं लेकिन इन सारे आरोपों को सचिन पायलट ने झूठा बताते हुए कहा कि वह भाजपा से कभी नहीं जुड़ना चाहते। 12 जुलाई की रात को अशोक गहलोत ने पार्टी मीटिंग बुलाई यह देखने के लिए के कितने विधायक उनके समर्थन में खड़े हैं चीजें और बिगड़ गईं जब सचिन पायलट और उनके समर्थक विधायक इस मीटिंग में हाजिर नहीं हुए। इसके बाद जितनी भी पार्टी मीटिंग्स हुई उन सभी से सचिन पायलट और उनके विधायक दूर रहे इसके बाद कांग्रेस ने सचिन पायलट को राजस्थान के उपमुख्यमंत्री पद से निष्कासित किया और साथ ही साथ राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रेसिडेंट के पद से भी निष्कासित कर दिया।

क्या गिर जाएगी कांग्रेस की सरकार?

राजस्थान में कुल 200 विधानसभा सीटें हैं। किसी भी पार्टी को अपनी सरकार बनाने के लिए 101 सीट जीतना अनिवार्य है। 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 107 सीट जीतकर विजयी रही जबकि भाजपा केवल 72 सीट जीत पाई और बाकी सीट अन्य दलों के खाते में गई। 12 जुलाई की पार्टी मीटिंग के बाद अशोक गहलोत ने 103 विधायकों का सहयोग अपने साथ बताया जबकि सचिन पायलट का कहना था की 30 उनके समर्थन में हैं और अब यदि यह 30 विधायक कांग्रेस छोड़कर भाजपा से जुड़ जाते हैं तो राजस्थान में कांग्रेस सरकार गिरना तय है। ऐसे में कांग्रेस यह चाहेगी कि राज्य विधानसभा में सचिन पायलट और उनके समर्थन में रहे विधायकों को अयोग्य करार कर दिया जाए जिससे राजस्थान की विधानसभा सीटें घट जाएंगी और कांग्रेस अपनी सत्ता बचा लेगी किंतु इसके खिलाफ सचिन पायलट और बाकी विधायकों ने सुप्रीम कोर्ट में अर्जी देकर इस फैसले को रुकवा दिया और अब सभी को सुप्रीम कोर्ट के फैसले का इंतजार है।

ऑडियो टेप्स और भाजपा का खेल

16 जुलाई को मीडिया में कुछ ऑडियो टेप्स लीक हुई और इसमें केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत का भी नाम आया इस मामले में राजस्थान पुलिस में गजेंद्र सिंह शेखावत और कांग्रेसी विधायक भंवर लाल शर्मा को पूछताछ के लिए बुलाया और एक संदि व्यक्ति जिनका नाम संजय जैन है उन्हें हिरासत में ले लिया इन ऑडियो टेप्स में साफ-साफ विधायकों को खरीदे जाने की बात की जा रही है। अशोक गहलोत ने भाजपा को कसूरवार ठहराया जबकि भाजपा ने सारे आरोपों को खारिज करते हुए इसे कांग्रेस की साजिश बताई। राजस्थान पुलिस ने भी इन टेप्स को लेकर कुछ खुलासा नहीं किया है।

क्या सच में भाजपा विधायकों को खरीदने की कोशिश कर रही है?

भाजपा पर विधायक खरीदे जाने के आरोप राजस्थान में पहली बार नहीं लगे इससे पहले भी मध्यप्रदेश में कांग्रेसी विधायक ने भाजपा को चुना और मध्य प्रदेश में कांग्रेस की सरकार गिरी इससे पहले 2018 में, कर्नाटक में भी कुछ ऐसा ही हुआ था, 2016 में उत्तराखंड में भी कांग्रेसी विधायक कांग्रेस छोड़ भाजपा से जुड़ गए इससे पहले गोवा, मणिपुर, आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में कुछ ऐसी ही कहानी दोहराई गई है जहां पर कांग्रेस के विधायक पार्टी छोड़ भाजपा से जुड़ते चले गए। और क्या भाजपा ने इन विधायकों को करोड़ों देकर खरीदा या नहीं यह तो शायद भाजपा ही बता पाए।

अब आगे क्या होगा राजस्थान में

अब सचिन पायलट ने अपने इरादे भाजपा से ना जोड़ने को लेकर साफ कर दिया है तो राजस्थान में यह देखने वाली बात होगी कि सचिन पायलट खुद की पार्टी बनाते हैं या राहुल, सोनिया, उन्हें मना कर कांग्रेस की सरकार राजस्थान में बचाते हैं या फिर मध्यप्रदेश की कहानी दोबारा अलग राग में सुनने को मिलती है।

हालांकि सचिन पायलट का इस हद तक विरोध का रुख अख्तियार करना दुबारा पार्टी में वापसी के सारे अंदेशों पर पानी फेरता हुआ दिखाई देता है। लेकिन राजनीति में कब क्या हो जाए कौन जानता है? मध्य प्रदेश में ज्योतिरादित्य सिंधिया के बाद राजस्थान में सचिन पायलट का विरोधी रुख कहीं न कहीं कांग्रेस की उस तीन युवा तिकड़ी के टूटने का भी सन्देश है जिनके साथ पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को जोड़कर देखा जाता रहा है।

भारत मे ऐसी औरतों को नहीं मिलेगा गुजारा भत्ता

भारत मे ज्यादातर विवाह विच्छेद होने के बाद भरण पोषण का सवाल खड़ा हो जाता है। भारतीय के संविधान में अधिकत्तर मामलों में महिलाओं को भरण पोषण देने का प्रावधान किया गया है।

विवाह के विच्छेदन के बाद कुछ प्रावधान ऐसे भी है जिनमें पत्नी को भरण पोषण के अयोग्य मानते हुए भरण पोषण नही देने का प्रावधान है।

आइए जानते है क्या है वे प्रावधान जिनमें महिलाएं भरण पोषण के लिए होती है अयोग्य:

भारत मे महिलाओं को भरण पोषण का प्रावधान स्वर्ग के समान है मगर संविधान में कुछ ऐसे भी सुरक्षा के प्रावधान है जिनके मुताबिक अयोग्य या बेईमान महिलाओं को भरण पोषण के लाभ के अयोग्य मानता है।

भरण पोषण प्राप्त करने के लिए किसी महिला के पास वैध कारण मौजूद होना चाहिए। आज हम आपको बताएंगे कि किन कारणों के होने की वजह से महिलाओं को भरण पोषण नही दिया जाता।

यदि महिला जारता की दशा में रह रही हो तो सीआरपीसी की धारा 125 की उपधारा 4 के तहत कोई भी महिला भरण पोषण की राशि प्राप्त करने की हकदार नही है। बॉम्बे और गोवाहाटी के उच्च न्यायालयों ने जारता में रहने की दशा को वर्तमान काल के समय को दर्शाता है और धारा 125 (4) को दर्शाता है।

यदि महिला दूसरी शादी करती है तो यह तर्कपूर्ण हो जाता है कि वह भरण पोषण प्राप्त करने के अधिकार से वंचित हो जाती है। इसे निरन्तर जारता भी माना जायेगा जब पहली शादी के अस्तित्व में रहते हुए किया गया हो।

यदि महिला अपनी मर्जी से पति के साथ रहने से मना कर दिया हो तो भी ये माना जायेगा कि उसकी पत्नी भरण पोषण के अधिकार से वंचित होगी। हालांकि, पति के साथ अलगाव में रहने या उसके साथ रहने से मना करने को साबित किया जाएगा।

न्यायालय के समक्ष ऐसे कई मामलें आते है जिनमें महिला अपने पति पर उसके माता-पिता से अलग रहने का दबाव डालती है। यदि पत्नी सास ससुर के साथ रहने से इनकार करती है और पत्नी द्वारा अपने पति को अलग रहने के लिए उसको अनावश्यक परिस्थितियों में डालना एवं पति से अलग रहने के लिए निरर्थक और नीरस बहाने बनान भी किसी महिला को भरण पोषण से वंचित करने का पर्याय कारण है।

ऐसी महिला जिसकी भरण पोषण की याचिका को सक्षम न्यायालय के द्वारा खारिज किया गया हो। वर्तमान कानूनी स्थिति के अनुसार यह मजिस्ट्रेट का दायित्व है कि यह भरण पोषण भत्ता देने के सम्बंध में सक्षम दीवानी न्यायालय के निर्णय का पालन करें। अर्थात यदि दीवानी न्यायालय के पास आपराधिक न्यायालय द्वारा पारित कोई आदेश आता है तो मजिस्ट्रेट का यह दायित्व होगा कि वह भरण पोषण भत्ते को रद्द कर दें।

यदि कोई महिला पति से अलग रह रही हो और भरण पोषण का त्याग कर देती है तो उस दशा में भी महिला भरण पोषण के अधिकार से वंचित होगी। ऐसी दशाओं में महिला स्वयं की इच्छा से भरण पोषण का त्याग करती है या विच्छेदन के समय एक मुश्त राशि प्राप्त कर लेती है।

इन मामलों के भरण पोषण के अधिकार का त्याग करने के बावजूद यदि परिस्थितियों में कोई बदलाव आता है तो, यदि वह स्वयं का रखरखाव नही कर पा रही हो, तब वह भरण पोषण प्राप्त करने का दावा कर सकती है।

हिन्दू विवाह अधिनियम की धारा 25 के तहत न्यायालय के द्वारा स्थाई भरण-पोषण का निर्णय करते वक्त पक्षकारों का आचरण एक निर्णायक कारक होता है । उच्च न्यायालयों के द्वारा ऐसे कई निर्णय पारित किये गये हैं जहां महिला को जारता, क्रूरता और अलगाव के कारण तलाक दिया गया हो, जहां पर न्यायालय ने या तो न्यूनतम भरण-पोषण राशि के लिए इन्कार किया हो या स्वीकृती दी हो।

भूपेश पाठक एडवोकेट,
उच्च न्यायालय इलाहाबाद

कोरोनावायरस ने दुनियाभर के लोगों को समझा दिया है नमस्कार करने का महत्व, पूरी हुई दुनिया कायल

मेल-मुलाकात और सम्मान व्यक्त करने में नमस्कार का प्रयोग भारत में सदियों से होता आ रहा है और अब दुनिया के कई देश भी समझने लगे हैं इसके मायने। दरअसल कोविड-19 ने दुनियाभर के लोगों को समझा दिया है इसका महत्व...

कोविड-19 ने बीते पांच माह में लोगों को शारीरिक तौर पर दूर कर दिया। आपसी मेल मुलाकात के तरीके बदल दिए और तब सभी ने भारतीय परंपरा में अनुपालित नमस्ते को अपनाया। अब इसकी पहुंच दुनिया के कई देशों में हो गई है। इन देशों में इस शब्द का अर्थ पूरी गहराई से समझा गया है इसलिए वहां भी इसका प्रचलन आम होता जा रहा है। अब तो तमाम शोध बता रहे हैं कि नमस्ते की मुद्रा से मिलती है कई बीमारियों पर अंकुश लगाने में मदद।

सब आपको समर्पित

दरअसल, नमस्ते शब्द संस्कृत व्याकरण से निकला है। यह दो शब्दों 'नमः' और 'अस्ते' से मिलकर बना है। जिनका मतलब है आपको प्रणाम। इस शब्द में आध्यात्मिकता का भी पुट है। नमस्ते कहने या करने से सामने वाले के प्रति सम्मान का भाव तो जाहिर होता ही है, साथ ही यह शब्द हमारे व्यक्तित्व में कृतज्ञता तथा नम्रता के भाव लाता है। इससे हम व्यवहारकुशल तो बनते ही हैं साथ ही हमें मानसिक शांति भी मिलती है।

समझें इनके बीच का अंतर

नमस्ते की तरह नमस्कार शब्द भी संस्कृत व्याकरण से लिया गया है। संस्कृत व्याकरण में इस शब्द को 'नमः' कहा जाता है, जिससे मतलब निकलता है नमन करना। खास बात यह है कि नमस्ते और नमस्कार, दोनों शब्दों से भावनात्मक रूप से भले ही समान भाव प्रकट होता हो मगर प्रयोग की दृष्टि से दोनों में अंतर है। दोनों शब्दों में नमन का आशय तो है मगर 'ते' तथा 'कार' में अंतर आ जाता है। ध्यान देने की बात है कि माता-पिता या उनकी आयु वाले व बुजुर्ग व्यक्ति को नमस्ते किया जाता है लेकिन नमस्कार शब्द का उपयोग दो समान व्यक्तियों, सहयोगियों, दोस्त, भाषण की शुरुआत में तथा साथ रहने वाले लोगों के बीच किया जाता है। नमस्ते करते वक्त दोनों हाथों को शरीर के अनाहत चक्र पर रखा जाता है और सिर झुकाकर आंखें बंद कर ली जाती हैं।

हमारे देश में अभिवादन तथा आदर प्रकट करने की दूसरी विधियां भी हैं। इनमें साष्टांग, प्रत्युथान, प्रत्याभिवादन एवं उपसंग्रहण शामिल हैं। व्यक्ति किसी को लेटकर प्रणाम करे तो उसे साष्टांग प्रणाम कहा जाता है। यदि किसी के स्वागत में खड़े हों तो उसे प्रत्युत्थान कहा जाता है। यदि कोई मेहमान विदा ले रहा हो तो उसके साथ थोड़ी दूर तक जाने को प्रत्याभिवादन कहते हैं। उपसंग्रहण में पांव छुए जाते हैं। इन सबके अलावा राम-राम कहने का प्रचलन भी कोई कम नहीं है। इस अभिवादन से सबसे पहले प्रभु श्रीराम का स्मरण होता है। राम-राम कहने का सीधा अर्थ यह है कि एक भगवान राम मुझमें हैं और एक भगवान राम आपके अंदर विराजमान हैं। इस अभिवादन पद्धति में जो व्यक्ति राम-राम बोलता है, उसका आशय यह है कि मैं भगवान राम के जैसा आचरण तथा व्यवहार करता हूं और यही अपेक्षा आपसे भी करता हूं।

बीमारियों पर अंकुश

कई शोध बताते हैं कि नमस्ते की मुद्रा से कई बीमारियों पर अंकुश लगाने में सफलता मिलती है। यदि आप हाथ न मिलाएं और सिर्फ नमस्ते कह दें तो कोरोना संक्रमण ही नहीं बल्कि सर्दी-जुकाम, हैजा, आंखों की बीमारी, टॉयफाइड, डायरिया जैसी संक्रामक बीमारियों से बच सकते हैं। नमस्ते के इस असर के कारण पिछले कुछ सालों से भारतीय डॉक्टर हाथ मिलाने के स्थान पर नमस्ते करने की आदत अपना रहे हैं। उनके लिए नमस्ते शब्द इसलिए भी बहुत ज्यादा उपयोगी है, क्योंकि वे रोज ही कई रोगियों के संपर्क में आते हैं और विभिन्न बीमारियों से संक्रमित होने का डर बना रहता है। ऐसे में जरूरी है कि कोरोना फाइटर्स समेत हम सभी आपस में मिलने के दौरान नमस्ते शब्द को व्यावहारिक तौर पर अपनाएं ताकि स्वयं भी सुरक्षित रहें और समाज को भी सुरक्षित कर सकें।

एशिया का सबसे बड़ा स्लम, धारावी आखिर कैसे लड़ा कोरोनावायरस से

विकास श्रीवास्तव

भारत में कोरोनावायरस का पहला केस 30 जनवरी को केरला में पाया गया जब चाइना के वूहान से आई एक छात्रा पॉजिटिव पाई गई। उसी के बाद देखते ही देखते पूरे भारत में महामारी का प्रकोप दिखने लगा। भारत में सबसे ज्यादा कोरोनावायरस के केसेस मुंबई शहर में पाए गए और महाराष्ट्र भारत का सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य रहा है। महाराष्ट्र के मुंबई में झुग्गी बस्तियों की कमी नहीं पूरे देश से मजदूर और अलग-अलग राज्यों से काम की तलाश में जाने वाले लोग इन झुग्गी बस्तियों में रहकर ही अपना गुजारा करते हैं। और इन सभी झुग्गी बस्तियों में सबसे बड़ा है मुंबई का धारावी।

मुंबई का धारावी

एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा स्लम है धारावी। धारावी मुंबई में स्थित एक छोटी सी झुग्गी बस्ती कही जा सकती है यह बस्ती सिर्फ 200 हेक्टर स्थान में फैली हुई है इतनी छोटी होने के बावजूद भी यहां लगभग 10 लाख लोगों के रहने का अनुमान है।

धारावी को दुनिया की सबसे बड़ी मलिन बस्तियों में से एक माना जाता है। क्षेत्र की कम वृद्धि वाली इमारत शैली और संकीर्ण सड़क संरचना धारावी को बहुत तंग और सीमित बनाती है। अधिकांश मलिन बस्तियों की तरह, यह अतिच्छादित है।

कैसे फैला कोरोनावायरस धारावी में

भारत में कोरोनावायरस के कारण 21 मार्च से लॉकडाउन का ऐलान कर दिया गया था। 1 अप्रैल 2020 को धारावी में पहला कोरोनावायरस पॉजिटिव व्यक्ति पाया गया। 56 वर्ष के एक दुकानदार पॉजिटिव पाए गए थे। पुलिस उन सभी को ढूंढने में लग गई जो जो उस व्यक्ति के संपर्क में आए थे, देखते ही देखते मुंबई की इस छोटी बस्ती धारावी कोरोनावायरस का हॉटस्पॉट बन चुका था संक्रमण इतनी तेजी से फैल रहा था कि एक समय के लिए उस चेन को तोड़ पाना नामुमकिन लग रहा था। धारावी जैसे जगह में सोशल डिस्टेंसिंग एक दूर की हकीकत है। इतनी छोटी बस्ती में लोगों को साफ पानी, बिजली, नाली जैसी आम सुविधाएं भी मिल पाना मुश्किल होता है और लोगों को दूर दूर रख पाना उससे भी बड़ा चुनौती।

मई महीने के अंत तक धारावी में 1216 पॉजिटिव लोग पाए जा चुके थे और 56 लोगों की मृत्यु हो चुकी थी इस छोटी सी बस्ती में इतनी आबादी होने पर सिर्फ सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कर लोगों को बचा पाना बहुत ही मुश्किल था। इस लड़ाई में मुम्बई नगर पालिका का बहुत बड़ा सहयोग रहा है उसके साथ/साथ मुंबई पुलिस इस लड़ाई में सबसे आगे रही है। और डॉक्टर नर्स इन सब ने भी अपनी भूमिका निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

मुंबई पुलिस का योगदान

जब धारावी में एक के बाद एक पॉजिटिव केसेस मिलना शुरू हो गए तब सबसे पहले मुंबई पुलिस आगे आकर लोगों को वायरस से जागरूक करने में लग गई। लोगों को फ्री मास्क, सैनिटाइजर पुलिस ने पहुंचाना शुरू किया। व्हाट्सएप मैसेजेस, मंदिरों और मस्जिदों में लगे लाउडस्पीकर जैसे उपकरणों का इस्तेमाल कर पुलिस ने लोगों को जागरूक बनाया। इसके साथ-साथ लॉकडाउन के कारण लोगों तक रोजमर्रा की जरूरत की चीजें भी घर-घर तक पहुंचाने में पुलिस ने कोई कसर नहीं छोड़ी। सब्जी मंडियों को खुले स्थान पर खोला जाने लगा और पुलिस ने तकरीबन 30000 लोगों को लॉकडाउन के दौरान मुफ्त में भोजन पहुंचाया दिन-रात पुलिस चौकन्ना रहकर सभी को जागरूक और उनकी जरूरतों को पूरा करने में लगी रही।

बृहन्मुंबई नगर पालिका की पहल

पुलिस के पीछे-पीछे बृहन्मुंबई नगर पालिका के कर्मचारियों ने भी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई पॉजिटिव लोगों के संक्रमित होते ही कांटेक्ट ट्रेसिंग करना चालू कर दिया लोगों के घर जा जाकर उनका तापमान मापना अथवा उन्हें कोरोना वायरस से बचने की सुझाव देना यदि कोई भी व्यक्ति बुखार सर्दी जैसे लक्षणों से पीड़ित होने पर तुरंत अस्पताल जाकर खुद की जांच कराए इसके लिए प्रोत्साहित करना और गली-गली जाकर लोगों का तापमान मापना सभी कामों में बृहन्मुंबई नगर पालिका का बहुत बड़ा योगदान रहा है जब लोगों की कमी पड़ गई तब मुंबई पुलिस ने धारावी में स्थित बिहार जनता संघ के लोगों को मुंबई पुलिस अपनी थाने बुलाकर कोरोनावायरस से लड़ने के सुझाव दे कर के उन लोगों को भी अपनी लड़ाई का एक छोटा सा हिस्सा बनाया।

किस तरह निभाई डॉक्टरों और नर्सों ने अपनी पात्र

डॉक्टर और नर्स इस अस्पताल में मरीजों के लिए लड़ते रहे और बाहर मुंबई पुलिस बृहन्मुंबई नगर पालिका बाकी दूसरे सभी अधिकारी इस संक्रमण को रोकने में तैनात रहे । सभी के एकजुट आकर साथ साथ लड़ने के कारण हीधारावी जैसी जगह इस संक्रमण को रोक पाई। सभी के प्रयास सराहनीय है और इसी कारण जून आते-आते संक्रमण से मरने वालों की संख्या 0 हो गई और और पॉजिटिव मिलने वाले लोगों की संख्या में भारी गिरावट आई।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने की सराहना

विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख डॉक्टर टेडरोज ने धारावी के मॉडल की तारीफ की और बोला कि विश्व को धारावी की लड़ाई से सीखने की आवश्यकता है। धारावी ने अब तक पूरी तरह विजय तो नहीं पाई लेकिन हालात जितनी खराब हो सकते थे उससे खुद को उधार पाया है दूसरी सरकारों को भी धारावी से सीकर इस संक्रमण को रोकने की पूरी कोशिश करनी है।

जब तक कोई भी काम हो ना जाए तब तक वह कार्य असंभव ही कहलाता है ऐसा किसी महान व्यक्ति ने कहा था और धारावी की कहानी इसी बात को सत्य बताती है। धारावी की कहानी हम सभी को यह सीख दे जाती है कि जब तक सभी एक साथ जुट कर इस महामारी से नहीं लड़ेंगे तब तक इसे हरा पाना नामुमकिन है।

लंगड़ा आम के बाद बनारसी पान को मिला जीआई टैग

बनारस का फेमस लंगड़ा आम को जीआई टैग मिलने के बाद अब बनारसी पान को भी जीआई टैग हासिल हो गया है। बनारस में इसे बड़ी उपलकि रूप में देखा जा रहा है।

बनारसी पान के बारे में ऐसा कहा जाता है कि अगर आप बनारस आए हैं और बनारसी पान नहीं खाया, तो बनारस की यात्रा अधूरी रह जाती है।

बनारस की खास पहचान यहां पर बनने वाली बनारसी साड़ी और बनारसी पान से ही है।

बनारसी पान को जीआई टैग मिलने के बाद जीआई एक्सपर्ट डॉ.रजनीकांत मिश्रा ने बताया कि बनारसी पान के साथ-साथ लंगड़ा आम के उत्पादकों को फसल में बेहतर दाम मिल सकेगा।

आपको जानकारी के लिए बता दें कि जीआई टैग किसी भी उत्पाद को उसके विशेष क्षेत्र में पैदा होने पर ही मिलता है। इन उत्पादों की खासियत और प्रतिष्ठा उस विशेष क्षेत्र में पैदा होने की वजह से स्थापित होती है।

जीआई टैग मिलने के बाद उस उत्पाद के नाम से बाजार में किसी और चीज के बेचने पर प्रतिबंध लग जाता है, हालांकि बनारस में पान की पैदावार बहुत ज्यादा नहीं होती।

बनारस के आसपास इलाकों से ही यहां पान आता है और बनारस में इसे बनाने और पकाने की प्रक्रिया की जाती है जिसकी वजह से इसे बनारसी पान का नाम दिया गया है।

बनारस के लंगड़ा आम और बनारसी पान के अलावा बनारसी केले को भी जीआई टैग मिलने की कवायद जोरों पर है।

आखिरकार मिल ही गई कोरोनावायरस की कमजोरी है, जल्दी खत्म हो सकता है कोरोनावायरस

चीन के वुहान शहर से फैलने वाले कोरोनावायरस ने पूरी दुनिया में आतंक मचा रखा है। पूरी दुनिया में कोरोना के मरीजों की संख्या एक करोड़ को पार चुकी है और मरने वालों की संख्या में भी लगातार इजाफा हो रहा है।

ऐसे में वैज्ञानिकों ने कोरोनावायरस की कमजोरी खोजने में बड़ी सफलता प्राप्त की है। इससे न सिर्फ इस वायरस को खत्म किया जा सकता है बल्कि वायरस के लिए नई वैक्सीन बनाने में भी मदद मिल सकती है।

वैज्ञानिकों ने कोरोना के जीनोम में संभावित लक्ष्यों की पहचान की है, जिन पर काम कर उन्हें साधा जा सकता है। अभी तक इन कमजोर बिंदुओं की पहचान नहीं हो पा रही थी, जिसके कारण कोरोनावायरस अनियंत्रित तरीके से फैलता ही जा रहा था।

आपको जानकारी के लिए बता दें कि न्यूजीलैंड की ओटागो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने कोरोनावायरस का कारण बनने वाले सार्सकोवी -2 के जीनोम में कमजोर बिंदुओं को लक्ष्य किया है, जिससे इस घातक वायरस को खत्म किया जा सकता है।

इंटरनेशनल जनरल ऑफ मॉलिक्यूलर साइंसेज में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि वायरल जीनोम में जिन लक्ष्यों की पहचान की गई है वह इसके एमआईआरएनए के जरिए हुई है।

इसका यह आरएनए न्यूक्लिक एसिड आधारित इम्यून सिस्टम होता है। जो शरीर की कोशिकाओं के भीतर कार्यरत रहता है।

वैज्ञानिकों ने यह दावा किया है कि एमआईआरएनए कोशिकाओं के अंदर जीन की गतिविधियों की रोकथाम के लिए आवश्यक है और इसके सहारे इस वायरस को खत्म किया जा सकता है। या यूं कहें कि इस वायरस को खत्म करने में अहम भूमिका निभा सकता है।

ओटागो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता एलेक्स मैकलेलान ने कहा कि हमारा अध्ययन यही कहता है कि यदि इन लक्ष्यों पर नजर रखें तो आने वाले समय में इसके परिणाम सकारात्मक दिखेंगे।

शोधकर्ताओं का मानना है कि इस लक्ष्य के सहारे कोरोनावायरस को कमजोर किया जा सकता है, सिर्फ इतना ही नहीं इस नई खोज के जरिए कोरोना की वैक्सीन बनाने में भी मदद मिल सकती है।

लॉकडाउन में इस अभिनेता ने डिप्रेशन का किया था खुलासा, अब सोशल मीडिया से बनाई दूरी

अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की खुदकुशी के बाद से ही फिल्म और टीवी इंडस्ट्री में डिप्रेशन को लेकर खूब चर्चा हो रही है। इसी बीच हाल ही में टीवी के एक अभिनेता ने खुलासा किया था कि लॉकडाउन के दौरान वह भी डिप्रेशन का शिकार हो गए थे। वहीं अब अपने पोस्ट के बाद अभिनेता ने फिर से सोशल मीडिया से दूरी बना ली है। वो अभिनेता कोई और नहीं उन्ही विचारों की वजह से वह बहुत परेशान हो गए थे। अपनी इंस्टा स्टोरी पर पार्थ ने बताया कि सोशल मीडिया को कुछ समय के लिए उन्होंने अलविदा कह दिया है।

पार्थ ने अपने घर की बालकनी से एक फोटो ली गई और तस्वीर के साथ पार्थ ने लिखा कि 'कुछ समय के लिए सोशल मीडिया से दूर हो रहा हूं। जल्द ही मिलेंगे।' मदद की। आप सभी का बहुत शुक्रिया।' उन्होंने इस पोस्ट के कैप्शन में लिखा था , 'हां, लॉकडाउन के दौरान डिप्रेशन और दुख के क्षणों का सामना करना पड़ा, लेकिन यही वो पल हैं जो हमें और मजबूत बनाते हैं और आगे बढ़ने में मदद करते हैं, ताकि एक दिन जब यह महामारी खत्म हो जाए तो हम फिर से इस दुनिया का सामना करने के लिए तैयार हों।'

'कसौटी जिंदगी की 2' में अनुराग बासु का किरदार निभाने वाले अभिनेता पार्थ समथान है। उन्होंने ने एक पोस्ट लिखकर इसका खुलासा किया था। उनका कहना था कि कोरोना वायरस की वजह से लगे लॉकडाउन के दौरान शूटिंग बंद कर दी गयी है और वो घर पर ही हैं। उनके भी मन में कई नकारात्मक विचार आ रहे थे और पार्थ के इस इंस्टा पोस्ट पर उनके फैंस अलग अलग प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं।

इससे पहले इंस्टाग्राम पर पार्थ समथान ने एक पोस्ट डाला था और लिखा थी कि, 'मैं अपने दोस्तों, फैंस और उन सभी प्यार करने वालों का शुक्रगुजार हूं, जिन्होंने एक पॉजिटिव और अच्छा इंसान बनने में मेरी आपको बता दें कि कुछ ही दिनों पहले विकास गुप्ता ने पार्थ समथान और प्रियांक शर्मा पर ब्लैकमेल करने का आरोप लगाया था। विकास ने अपने एक ट्वीट में लिखा था, 'अब और ब्लैकमेल और तंग नहीं होऊंगा। प्रियांक शर्मा, पार्थ समथान आप दोनों का धन्यवाद मुझे मजबूर करने के लिए ताकि सच्चाई सामने आ सके।'

सुशांत सिंह राजपूत की आखरी फिल्म ने तोड़े कई रिकॉर्ड

सुशांत सिंह राजपूत अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनकी आखिरी फिल्म 'दिल बेचारा' रिलीज हो चुकी है। फैन्स को सुशांत की इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार था। यह फिल्म इंग्लिश नॉवल और हॉलीवुड की फिल्म 'द फॉल्ट इन आवर स्टार्स' पर बनाई गई है। सुशांत ने अपनी सारी फिल्में जिंदादिली वाली की हैं और यह फिल्म भी उससे अलग नहीं है। सुशांत का फिल्मी करियर छोटा जरूर था लेकिन बेहतरीन था।

अगर आप सुशांत के फैन हैं तो, यह फिल्म आपको सुशांत के लिए हंसना सिखाएगी। सुशांत को देखकर आपका मन खुश हो जाएगा और कहीं न कहीं जैसे जैसे ये फिल्म ख़तम होगी आपको उतना ही इमोशनल कर जायेगी। मैनी के रोल में शायद सुशांत से बेहतर कोई हो ही नहीं सकता था। सुशांत का पहला सीन निश्चित तौर पर फैन्स को इमोशनल कर जाएगा। मैनी के कैरेक्टर में सुशांत को देख के आपको जितनी ख़ुशी होगी उतना ही गम भी होगा। इस फिल्म को देखनें के बाद यह पता चलता है कि सुशांत को हमने तब खोया है शायद जब वो अपने बेस्ट स्टेज पर थे। उनकी ऐक्टिंग और कॉमिक टाइमिंग गजब की थी इस फिल्म में। सुशांत के फेशियल एक्सप्रेशन और डायलॉग डिलिवरी, वॉइस मॉड्यूलेशन सब गज़ब के है।

यह फिल्म मुकेश छाबड़ा की डायरेक्टर के तौर पर यह पहली फिल्म है। फिल्म के डायलॉग्स इमोशनल करने वाले हैं और लोकेशंस तो बेहद ही खूबसूरत हैं। इस फिल्म की स्टार्टिंग में ही एक कहानी नरराते की गयी है, एक था राजा एक थी रानी दोनों मर गए खत्म कहानी लेकिन इस कहानी को और फिल्म दोनों को वह राजा यानी की सुशांत ने पूरी की।

सुशांत सिंह राजपूत की आखिरी फिल्म दिल बेचारा ने रिलीज होते ही सभी रिकॉर्ड्स तोड़ डाले। ओटीटी प्लेटफार्म पर यानी की हॉटस्टार पर रिलीज हुई फिल्म को देखने के लिए बड़ी सख्या में लोग उत्सुक नजर आए। इसकी वजह से फिल्म ने कई तरह के रिकॉर्ड्स कायम किए हैं। हालांकि फैंसकी उत्सुकता इतनी थी की फिल्म के टाइम पर होतसरत की साइट क्रैश हो गयी थी मगर ज्यादा देर ये समस्या नहीं हुई थी थोड़ी देर में सब ठीक हो गया और 24 घंटे के अंदर ही इस फिल्म ने एक नया रिकॉर्ड भी बना लिया जो ये था की रिलीज़ होते ही 24 घंटे के अंदर एक मिलियन से भी ऊपर व्यूज मिल गए।

'दिल बेचारा' को दर्शकों से खूब प्यार मिला है और इसका असर फिल्म की रेटिंग पर भी देखा जा सकता है। फिल्म को आईएमडीबी पर अब तक की सबसे ज्यादा रेटिंग मिली है। इस फिल्म को 10\10 की रेटिंग मिली जो अब तक कभी किसी फिल्म को नहीं जल्दी नहीं मिल पाया है और यह एक रिकॉर्ड है। हालांकि, वोटिंग बढ़ने के साथ ही फिल्म की रेटिंग में कुछ कमी तो आई, लेकिन इसके बावजूद भी फिल्म ने रेटिंग के मामले में रिकॉर्ड कायम किया। सुशांत की इस आखरी फिल्म ने लोगो को काफी इमोशनल किया है और इस फिल्म ने काई सारे रिकाड्र्स अपने नाम किये है।

यह एक ऐसी फिल्म है जो हमेशा दर्शकों के दिलों में सुशांत की यादों के तौर पर बनी रहेगी। दिल बेचारा फिल्म को अब तक की सबसे बड़ी ओपनिंग का खिताब भी मिला है। अपनी आखिरी फिल्म के आखिरी सीन में भी सुशांत ने अपने फैन्स को उन्हें हंसते हुए याद रखने का संदेश दे दिया है। यह फिल्म सुशांत के लिए सच्ची श्रद्धांजलि है।

ऐश्वर्या और आराध्या की छुट्टी के बाद नहीं रोक पाए अपने आंसू।

अभिषेक बच्चन ने ट्वीट किया है कि उनकी पत्नी, ऐश्वर्या राय और बेटी आराध्या ने कोरोनोवायरस के लिए कोविद-19 नेगेटिव रिपोर्ट पाया गया है, और उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। वह पिता अमिताभ बच्चन के साथ निगरानी में रहते हैं।

उन्होंने ट्वीट किया, "आपकी निरंतर प्रार्थना और शुभकामनाओं के लिए आप सभी का धन्यवाद। हमेशा के लिए प्रेरित। ऐश्वर्या और आराध्या ने शुक्र है कि उन्होंने कोविद-19 नेगेटिव रिपोर्ट पाए गए है और उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। वे अब घर पर होंगे। मैं और मेरे पिता मेडिकल स्टाफ की देखरेख में अस्पताल में रहते हैं। " बाद में दिन में अमिताभ ने हिंदी में ट्वीट किया कि ऐश्वर्या और आराध्या की छुट्टी के बाद वह अपने आंसू नहीं रोक पाए। उन्होंने अपने ट्वीट में भगवान को धन्यवाद दिया:

जहां 11 जुलाई से अमिताभ और अभिषेक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, वहीं ऐश्वर्या और आराध्या को हल्के लक्षणों के विकास के बाद 12 जुलाई को सकारात्मक परीक्षण करने की घोषणा की गई थी। उन्हें उस सप्ताह बाद में अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अमिताभ अपने सोशल मीडिया अकाउंट्स पर नियमित अपडेट साझा करते रहे हैं। वह शुभचिंतकों का शुक्रिया अदा करते हुए कहते हैं कि उनका समर्थन वही है जो कठिन समय से उन्हें मिल रहा है। हाल ही में, उन्होंने अभिषेक, ऐश्वर्या और आराध्या के साथ एक तस्वीर साझा की और लिखा, "हम आपका प्यार देखते हैं .. हम आपकी प्रार्थना सुनते हैं .. हम आपके हाथ जोड़ते हैं .. आभार और धन्यवाद! "

बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में बनाएं करियर, कॉर्पोरेट जगत में पाएं नौकरी के एक से एक शानदार ऑफर

आज के इस कम्पटीशन के दौर में करियर डिसाईड करना बहुत ही मुश्किल हो जाता है क्या करें क्या ना करें ये सोचना और डिसाईड करना भी बड़ा टास्क हो जाता है। लेकिन इस आर्टिकल से शायद आपकी थोड़ी सी मदद हो जायेगी।

बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन का कोर्स एक ऐसा फील्ड है जिसमें किसी भी तरह के बिजनेस को चलाने के लिए ऑपरेशंस, मैनेजमेंट और उससे संबंधित हर क्षेत्र के बारे में हर एक चीज़ें बताई जाती हैं। अगर आपको इस फील्ड में अच्छी नॉलेज हो जाए तो आपके बिजनेस के ग्रोथ और बेनिफिट दोनों पर ही डायरेक्ट या इनडायरेक्ट काफी असर पड़ता है।

आजकल हर बिजनेस फर्म या कंपनी में फायनांस, मार्केटिंग ह्यूमन रिसोर्स और लॉजिस्टिक जैसे कई सारे डिपार्टमेंट होते हैं तब जाकर कोई बिजनेस सही से चल पाता है। बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन कोर्स का उद्देश्य इन डिपार्टमेंट को चालने के लिए जरूरी स्किल्स और समझ के साथ विकसित करना है। ताकि जब भी आप कार्पोरेट वर्ल्ड में अपना कदम रखे तो वहां की हर चीज़े आपको पता हो।

क्या है बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन?

बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन के कोर्स में स्टूडेंट्स को कॉर्पोरेट जगत के मैनेजमेंट फील्ड में एंटर करने के बारे में सिखाया जाता है। यह डिग्री बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन और मैनेजेरियल फंक्शन को सही ढंग से चलाने के लिए जरूरी स्किल्स को सिखाती है। बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन की फील्ड में आप बीबीए और एमबीए जैसे प्रोफेशनल कोर्सेज को कर सकते हैं। इस फील्ड में अच्छा करने के लिए स्टूडेंट्स में लीडरशिप क्वालिटी,डिसीजन मेकिंग स्किल्स और कम्युनिकेशन स्किल होना बहुत जरूरी है।

क्वालिफिकेशन एंड कोर्सेस

अंडर ग्रेजुएट कोर्स- बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन की फील्ड में आप बीबीए कर सकते हैं जो एक ग्रेजुएट डिग्री कोर्स है। इसके लिए आपको कम से कम 55 प्रतिशत मार्क्स के साथ 12वीं पास होना जरूरी है। बीबीए एक ग्रेजुएशन कोर्स है जो 3 साल का होता है जिसमें 6 सेमेस्टर होते हैं।

पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स- बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन की फील्ड में एमबीए आता है जो पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री हैं। एमबीए की पढ़ाई आप 2 साल में पूरा कर सकते हैं। इसमें 4 ही सेमेस्टर होते हैं। एमबीए करने के लिए आपके पास बीबीए या कोई भी ग्रेजुएट डिग्री होना जरूरी है बिना इसके आप एमबीए नहीं कर सकते।

डॉक्टरेट कोर्स- बिजनेस मैनेजमेंट में आप पीएचडी भी कर सकते हैं, अलग अलग मैनेजमेंट यूनिवर्सिटीज पीएचडी को 3 से 5 साल में कराती हैं। पीएचडी करने के लिए आपके पास पोस्टग्रेजुएट डिग्री का होना बहुत जरूरी है।

एंट्रेंस एग्जाम एंड इंस्टीट्यूट्स

बीबीए के लिए एग्जाम

1. आईपीएम एप्टीट्यूड टेस्ट
2. एनएमआईएमएस मैनेजमेंट एप्टीट्यूड टेस्ट अंडर ग्रेजुएट
3. गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी कॉमन एंट्रेंस टेस्ट
4. दिल्ली यूनिवर्सिटी ज्वाइंट एंट्रेंस टेस्ट
5. सिम्बायोसिस एंट्रेंस एग्जाम
6. अंडर ग्रेजुएट एटिट्यूड टेस्ट

एमबीए के लिए एग्जाम

1. कॉमन एडमिशन टेस्ट
2. कॉमन मैनेजमेंट एडमिशन टेस्ट
3. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड एग्जाम
4. एआईएमए मैनेजमेंट एप्टीट्यूड टेस्ट
5. कॉमन मैनेजमेंट एडमिशन टेस्ट
6. एनएमआईएमएस मैनेजमेंट एप्टीट्यूड टेस्ट

टॉप इंस्टीट्यूट्स

1. आईआईएम, अहमदाबाद
2. आईआईएम, बैंगलोर
3. आईआईएम, कलकत्ता
4. आईआईएम, लखनऊ
5. एक्सएलआरआई, जमशेदपुर
6. आईआईएफटी, दिल्ली
7. सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी
8. आईसीएफएआई,यूनिवर्सिटी
9. जेबीआईएमएस, मुंबई
10. एनएमआईएमएस, मुंबई

सैलरी एंड रिक्रूटर्स

बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन के फील्ड में सैलरी का पैकेज काफी अच्छा मिलता है। शुरुआत में बीबीए करने वाले एक फ्रेशर को लगभग 2 से 3 लाख का सालाना पैकेज आसानी से मिल जाता है और अगर आपका 5 साल से ज्यादा एक्सपीरिएंस है तो आपका सैलरी पैकेज 5 से 7 लाख के बीच हो सकता है। अगर आपने एमबीए किया हुआ है तो शुरुआत में आपको 3 से 4 लाख तक का पैकेज मिल सकता है। इस इंडस्ट्री में अगर आपको 5 साल से ज्यादा का एक्सपीरिएंस हो जाता है तो उसके बाद आपको 7 से 10 लाख तक कमा सकते हैं और अगर आप नौकरी खोज रहें हैं तो नीचे दी गई कंपनियों में अप्लाई कर सकते हैं।

1. कैपजेमिनी
2. आदित्य बिड़ला ग्रुप
3. टाटा एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसेज
4. टेक महिंद्रा
5. रिलायंस इंडस्ट्रीज
6. नेस्ले
7. रेकिट बेंकिजर
8. डेलॉयट
9. बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप
10. स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

21 वीं सदी मे हमारी मातृ भाषा हिन्दी से दूर होती हुई हमारी नई पीढ़ी

यूपी बोर्ड की हाईस्कूल की परीक्षा 2020 में अंग्रेजी से ज्यादा छात्र हिंदी विषय में फैल हुए हैं 27 जून 2020 को जारी यूपी बोर्ड रिजल्ट में हाईस्कूल के 5.27 लाख छात्र हिंदी विषय में फेल हो गए जबकि, अंग्रेजी विषय में फेल होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या 5.19 लाख है और यह आंकड़े इसलिए भी चौकाने वाले हैं, क्योंकि हिंदी भाषी बेल्ट में उत्तर प्रदेश एक बड़ा राज्य है तथा उत्तर प्रदेश राज्य की आम बोलचाल की भाषा में हिंदी का इस्तेमाल सर्वाधित रूप से होता है ऐसा नहीं की ऐसे नतीजे पहली बार आए हैं, ऐसा ही रिजल्ट 2019 में भी रहा था जबकि 2019 हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में हिन्दी में 5.74 लाख से अधिक छात्र फेल हुए थे, वहीं, अंग्रेजी में भी 5.02 लाख छात्र फेल हुए थे। साल 2020 के रिजल्ट में 12वीं में 2.70 लाख छात्र हिंदी के पेपर में फेल हुए हैं और ऐसे में अंदाजा लगाया जाता सकता है छात्र कितनी बड़ी संख्या में हिंदी के पेपर को नजरअंदाज कर रहे हैं और उनकी रुचि कहीं न कहीं हिन्दी भाषा मे कम होती हुई प्रतीत हो रही है।

मातृभाषा हिन्दी के उत्थान के प्रयास हर घर में होना चाहिए और हिन्दी के प्रति गंभीरता और सम्मान जरूरी है तभी हम अपनी मातृभाषा की लाज बचा पाएंगे। विदेशी लोग हिन्दी को अपना रहे हैं जबकि हम खुद इससे जी चुरा रहे हैं। जरूरत हमारे नजरिए को बदलने की है। ये बातें विभिन्न महाविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाने वाले विशेषज्ञों ने कही हैं महाविद्यालयों में हिन्दी विभाग के विद्यार्थियों की संख्या कितनी कम हुई है और हिन्दी के उत्थान के लिए क्या प्रयास किए जाना चाहिए।

शहर के विभिन्न शासकीय महाविद्यालयों में हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर स्तर तक पढ़ाई की व्यवस्था है। चिंता की बात है कि आम विषयों की अपेक्षा हिन्दी विषय के विद्यार्थियों की संख्या लगातार गिर रही है। शासकीय कला व वाणिज्य महाविद्यालय की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पलता जैन मजेजी ने बताया कि दो साल में हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों की संख्या 70 से घटकर 15 हो गई है। सेमेस्टर पद्धति लागू होने और अन्य कारणों से भी हिन्दी साहित्य में नियमित विद्यार्थियों की संख्या तेजी से कम हो रही है।

न्यू जीडीसी के प्राचार्य डॉ. अशोक वाजपेई ने बताया कि संस्थान मंत स्नातकोत्तर उपाधि के पूर्वार्द्ध में हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों की संख्या 20 है। पिछले कुछ सालों में यह कम हुई है, क्योंकि युवा वर्ग में हिन्दी भाषा की उपाधि हासिल करने की रुचि कम हुई है। हिन्दी के प्रति रुझान पैदा करने और ज्यादा से ज्यादा उपयोग के लिए विद्यालयीन स्तर से ही प्रयास की जरूरत है।

हिन्दी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. मनोरमा अग्रवाल ने बताया कि पिछली बार हिन्दी साहित्य के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (पूर्वार्द्ध) में 16 विद्यार्थी थे, इस बार 8 ही हैं। विद्यार्थियों में हिन्दी के आधारभूत ज्ञान का अभाव होना इसका बड़ा कारण है। बच्चों को अच्छी हिन्दी लिखने, पढ़ने और सीखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। मार्गदर्शिकाओं और कुंजियों से हटकर किताबों पर जोर दिया जाना तथा हिन्दी से संबंधित रोजगार के अवसर बढ़ाए जाना चाहिए।

अधिकांश वे ही लोग अंगरेजी बोलने की कोशिश करते हैं जिन्हें हिन्दी और अंगरेजी दोनों का ही अधूरा ज्ञान होता है। कई लोग बोलचाल की भाषा में अंगरेजी के शब्दों का उपयोग करते हैं, लेकिन व्याकरण हिन्दी की ही होती है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनका दोनों ही भाषाओं का ज्ञान कमजोर है कई लोग खुद के अधीनस्थ लोगों से अथवा कम शिक्षित लोगों से अंगरेजी में बात कर यह जताना चाहते हैं कि उनके ज्ञान का स्तर काफी ऊंचा हैं। खुद को ज्यादा श्रेष्ठ साबित करने के इस तरह का दिखावा छोड़कर मातृभाषा के प्रति गंभीरता रखी जाना चाहिए।

कविता पाठक

कैसे बनाए रखे शरीर को स्वस्थ?

हम सभी जानते हैं कि खुद को स्वस्थ रखना कितना महत्वपूर्ण है। हालांकि, अधिकांश लोगों के पास अभी भी समय का अभाव है या वे अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह हैं। ठीक है, ध्यान दें कि अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखना हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है और आपको हर समय इसे करने का प्रयास करना चाहिए, भले ही लागत कितनी भी हो। आप इसे निम्नलिखित युक्तियों के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

स्वस्थ खाना

जब आपके स्वास्थ्य की बात आती है तो आपका आहार बहुत योगदान देता है। संतुलित आहार लेना सुनिश्चित करने के अलावा, अपने शरीर के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व प्राप्त करने के लिए ढेर सारे फल और सब्जियाँ लें। इसके अलावा, ध्यान दें कि सभी कैलोरी आपके शरीर के लिए हानिकारक नहीं हैं। इसलिए, यदि आप स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो भोजन से बचें, इसके बजाय भोजन का सही हिस्सा खाएं।

हमेशा एक अच्छी रोशनी वाले कमरे में स्क्रीन देखें और स्क्रीन बुद्धिमानी से चुनें

यह अनुशंसा की जाती है कि आंखों के तनाव को कम करने के लिए अच्छी तरह से रोशनी वाले कमरे में स्क्रीन देखी जाए। आम तौर पर, एक मॉनिटर या स्क्रीन पर चमक का स्तर मध्यम चमक सेटिंग के बीच में रखा जाना चाहिए और उसी को पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था वाले कमरे में देखा जाना चाहिए। मंद रोशनी वाले कमरे में स्क्रीन देखने से आंखों का तनाव बढ़ता है और रेटिना को नुकसान होता है। स्क्रीन के संबंध में ध्यान देने वाली एक और बात यह है कि यदि कोई विकल्प हो, तो अपने बच्चे को 33 सेंटीमीटर के स्मार्टफोन की बजाय 50 सेंटीमीटर की मध्यम श्रेणी के लैपटॉप या टैबलेट का उपयोग करने देना बेहतर होता है।

बार-बार आँख झपकना

स्क्रीन देखने के दौरान तल्लीन होने की प्रवृत्ति होती है और बच्चे अक्सर पलक झपकाना भूल जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप आँखों का पानी, असामान्य पलक पैटर्न, बलपूर्वक पलक झपकना या आँख रगड़ना होगा। ये सभी पर्याप्त निमिष की कमी के कारण सूखी आंखों का परिणाम हैं और यह वातानुकूलित कमरों में खराब है। हमें अपने बच्चों को और खुद को सचेत रूप से पलक झपकते ही याद दिलाना होगा जब स्क्रीन के सामने तनाव मुक्त देखने को सुनिश्चित करना होगा।

नियमित ब्रेक लें

आंखों और शरीर दोनों के लिए स्क्रीन से नियमित ब्रेक लेना बहुत महत्वपूर्ण है। आदर्श रूप से, हमें 20-20-20 नियम का पालन करना चाहिए जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक 20 मिनट में हमें 20 सेकंड के लिए 20 सेकंड के लिए स्क्रीन से दूर देखना चाहिए। ये छोटे विराम हमारी आंखों को एक दूर की वस्तु पर ध्यान केंद्रित करने का मौका देते हैं और गर्दन की मांसपेशियों को आराम करने में भी मदद करते हैं। यदि हम नियमित रूप से इस प्रक्रिया का पालन करते हैं तो हम एक स्क्रीन के सामने पूरा दिन बिताने के बावजूद आंखों की थकान से बच सकते हैं। यह बहुत संभव है कि ऑनलाइन कक्षाओं की अवधि 20 मिनट से अधिक हो, इसलिए इस नियम का बिल्कुल पालन नहीं किया जा सकता है, लेकिन ऐसे मामले में, सत्र समाप्त होते ही या सत्र के भीतर जब भी सुविधाजनक हो, एक ब्रेक लिया जाना चाहिए। अधिकांश ऑनलाइन पाठ्यक्रम और कक्षाएं 20-40 मिनट से अधिक अवधि के नहीं हैं और इस नियम का अभ्यास किया जा सकता है।

जो जरूरी है, उसके लिए स्क्रीन टाइम कम से कम करें

हमें काम, शिक्षा, मनोरंजन और सामाजिक कनेक्शन जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए स्क्रीन का उपयोग करने की आवश्यकता है। इनमें से, वैकल्पिक तरीकों से कई काम किए जा सकते हैं। इसलिए, स्क्रीन का उपयोग न्यूनतम और केवल सबसे आवश्यक के लिए रखा जाना चाहिए। जहां भी संभव हो, बचें। माता-पिता के रूप में, यदि हम स्मार्टफोन के टेलीविजन से चिपके हुए हैं, तो बच्चे के लिए इन उपकरणों का उपयोग करना चाहते हैं। जब बच्चा पढ़ने या अन्य कम मज़ेदार काम करता है तो हम स्क्रीन के समय बिताने की उम्मीद नहीं कर सकते।

व्यायाम

शारीरिक व्यायाम आपको अपने शरीर को फिट रखने में मदद करता है और इसलिए, दूसरों के बीच हृदय की स्थिति, मधुमेह और मोटापे जैसी कालानुक्रमिक बीमारियों से सुरक्षित है। व्यायाम करने से अतिरिक्त कैलोरी जलाने और मांसपेशियों के निर्माण में मदद मिलती है। फिर से, आपको वर्कआउट में शामिल होने के लिए जिम का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है। आप इसे अपने घर पर कर सकते हैं। एक छोटी दूरी के लिए चलना और लिफ्ट के

बजाय एक सीढ़ी का उपयोग करना, आपको रोजाना व्यायाम करने के लिए सबसे अच्छा तरीका है। पाचन में मदद करने के लिए और अपने सिस्टम से विषाक्त पदार्थों को निकालने के लिए भरपूर मात्रा में पानी लें। हालांकि, अन्य सभी शर्करा वाले पेय जैसे सोडा के साथ-साथ कबाड़ से बचें क्योंकि वे अस्वस्थ हैं और आपके तामचीनी को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं।

मज़े करो

मौज-मस्ती करना मानसिक समस्याओं से बचने का एक शानदार तरीका है। मनोरंजन तनाव को रोकता है जो अवसाद का कारण बन सकता है। इसलिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इसे गेमिंग के माध्यम से लेओवेगास रूले कैसीनो में या छुट्टी के दौरान प्राप्त करते हैं। कई तरीके हैं जिनसे आप मज़े कर सकते हैं, हालाँकि, यदि आप खुद का आनंद लेने के तरीके के रूप में जुआ खेलना चाहते हैं, तो आप रिज़क कैसीनो में सुरक्षित होना सुनिश्चित करें।

एक बच्चे की तरह सो जाओ

पर्याप्त नींद लेना आपके मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी स्वस्थ है। एक वयस्क को एक दिन में लगभग 8 घंटे सोना चाहिए। यदि आप इसे कम करते हैं, तो आप तनाव विकसित करने और यहां तक कि अधिक वजन बढ़ने का जोखिम उठा सकते हैं और इसलिए, स्वास्थ्य पर खतरा हो सकता है। जब आप सोते हैं, तो आप आराम करते हैं और अपने शरीर को पुनः उत्पन्न करते हैं, नए दिन के कार्य का सामना करने के लिए तैयार होते हैं।

रोजाना ब्रश और फ्लॉस करें

आपके संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए आपके स्वास्थ्य की देखभाल आवश्यक है। यदि आप अपने मौखिक स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखते हैं, तो आपका संपूर्ण स्वास्थ्य खतरे में होगा। उदाहरण के लिए, यदि आपके दांत खराब हो जाते हैं, तो आप अपने शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त करने के लिए अपने भोजन को पचा नहीं पाएंगे। इसलिए, मौखिक देखभाल की उपेक्षा न करें। दिन में कम से कम दो बार ब्रश करें और अपने दंत सूत्र को हमेशा ताजा और ऊर्जावान बनाए रखने के लिए रोजाना फ्लॉस करें।

अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखना हमेशा आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए। जरा इस पर सोचो; यदि आप बीमार हैं तो आप अपनी दिनचर्या को काम नहीं कर सकते। इसलिए, जितना आप अपने व्यवसाय या कार्यालय को चलाने में व्यस्त हैं, सुनिश्चित करें कि आपने व्यायाम के लिए थोड़ा समय अलग रखा है, अच्छी तरह से खाया है, और अन्य स्वस्थ युक्तियों के बीच मज़ा लिया है। अपने शरीर और दिमाग को फिट रखें, और आप पूरी तरह से जीवन का आनंद लेंगे।

देर से सोने वाले टीनएजर्स में अस्थमा, एलर्जी की आशंका अधिक

पीने के पानी के बाद नींद ही ऐसी चीज है जिसका डॉक्टर भी ध्यान रखने के लिए कहते हैं। आज के समय में हर व्यक्ति को कम से कम सात से आठ घंटे की नींद लेने की सलाह दी जाती है। हाल ही के एक रिसर्च में पाया गया कि जो टीनएजर्स देर रात तक जागते हैं और सुबह देर तक सोते हैं, उनमें एलर्जी और अस्थमा होने की आशंका ज्यादा हो जाती है, उनकी तुलना में जो समय पर सोते और सुबह जल्दी जागते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार अध्ययन के निष्कर्ष में नींद के महत्व को प्रबल बनाते हैं, विशेष रूप से टीएनएजर्स में। अध्ययन में पश्चिम बंगाल के 13 से 14 वर्ष की आयु के 1,684 टीनएजर्स ने इस रिसर्च में भाग लिया। इनसे कई प्रश्न पूछे गए जैसे कि क्या वे सुबह जल्दी उठते, रात को देर से सोते हैं या फिर इन दोनों से अलग हैं। दिन के किस समय वे थके हुए महसूस करते हैं, वे कब उठना पसंद करते हैं आदि। उनसे पूछा गया था कि वे किसी भी सांस की घरघराहट का अनुभव करते हैं, अस्थमा, एलर्जी जैसे नाक बहना और छींकना आदि। रिसर्चर्स ने उनकी नींद की आदतों के साथ उनके लक्षणों की तुलना की और अगर उन सभी कारणों को भी ध्यान में अगर रखा जाए जैसे कि अस्थमा के प्रभाव होते जैसे रहने की स्थिति, परिवार के धूम्रपान करने वाले सदस्य के साथ रहना। रिसर्च में सामने आया कि अस्थमा होने की संभावना उन टीनएजर्स में लगभग तीन गुना अधिक थी, जो बच्चे देर से सोते थे और सुबह देर से जागते थे।

डॉक्टर्स के मुताबिक़ रिसर्च के समय जो परिणाम आये वो ये बताते हैं कि सोने के समय से और टीनएजर्स में अस्थमा और एलर्जी के बीच एक संबंध है। निश्चित तौर पर तो यह नहीं कहा जा सकता कि देर से सोना अस्थमा का कारण बन रहा है, लेकिन स्लीपिंग हार्मोन मेलाटोनिन अक्सर देर से सोने वालों में सिंक से बाहर हो जाता है और टीनएजर्स में ऐलर्जिक रिपोन्स को प्रभावित करता है।

सोचो ये संसार कैसा होगा?

वृक्षों के बिन संसार कैसा होगा
शायद बिन तारो के आसमान जैसा होगा।
कोई मोल नही हो सकता इनका।
ये अनमोल तोहफा है प्रकृति का।
प्राणवायु दाता ये वृक्ष हमे देते हैं ठंडक।
जिन्हें देखकर आंखों को मिलती है राहत।
ये वृक्ष ही तो बढ़ाते हैं इस भू धरा की रौनक।

थे वृक्षों के घनघोर जंगल।
साथ बहती थी नदी करती कलकल।
पर आज जकड़ गयी उस आज़ाद नदी की धारा है।
उन्ही के द्वारा जिनको सदियों से इसने तारा है।
जिसमे डुबकी लगाकर सब करते थे अपने पापो को साफ।

आज वही नदी हमसे मांग रही है इंसाफ।
जिस धारा ने सबको तन मन से किया निर्मल ।
वही पवित्र धारा आज बन गयी है मल जल।
अब इन पापों को धोने कहां डुबकी लगाओगे।
किसी प्रायोगशाला में इसे न बना पाओगे।

अगर समय रहते अब भी नही चेते हम।
आंसू भी ना बचेंगे करने आंखों को नम।
सोचो तब प्राणी असहाय कैसा होगा।

देखो कैसी विडंबना है आज।
कभी फसले उगाने को पानी पड़ता है कम।
तो कभी बाढ़ में लहलहाती फसले तोड़ती है दम।

कीर्ति श्रीवास्तव

आखिर हम जा कहां रहे हैं।
प्रकृति को नष्ट करके पा क्या रहे हैं।
शायद शीषमहलो की चकाचौंध में रहकर भूलने लगे हैं आकाश के तारों की चमक।
मोटर गाड़ियों के शोर के आगे सुनते नही चिड़ियों की चहक।

अपनी प्रकृति को बचाने के लिए आज ही कदम कोई कदम उठाना होगा।
क्योंकि बीत गया यह समय अगर
तो फिर अपने किये पे पछताना होगा।

रहस्यमयी धनुषकोडी जाने से पहले जान लें ये जरूरी बातें

तमिलनाडु का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। यह उन गिने चुने क्षेत्रों में से एक है जो ऐतिहासिक काल से अब तक लगातार बसे हुए है। तमिल नाडु का क्षेत्रफल 1,30,057 किमी2 है। यह भारत के दक्षिण में स्थित है। तमिल नाडु देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जिसकी सीमा के भीतर पूर्वी और पश्चिमी घाट पड़ते हैं जो नीलगिरी में जुड़े हुए हैं।

दुनिया में प्रभु श्रीराम के कई भक्त हैं और उनके चमत्कारों के किस्से भी जग जाहिर हैं। मगर आज हम आपको रामचंद्र जी से जुड़े एक ऐसे रहस्यमयी जगह के बारे में बताएंगे, जिसकी सच्चाई जानकर आप दंग रह जाएंगे। इस जगह का नाम धनुषकोडी है। बताया जाता है कि रात के अंधेरे में यहां एकदम सन्नाटा पसर जाता है। रात के अँधेरे में यहां से अजीबो-गरीब आवाजें आती हैं। तमिलनाडु के पूर्वी तट पर रामेश्वरम द्वीप के किनारे स्थित धनुषकोडी को भारत का आखिरी छोर कहा जाता है। ये भारत और श्रीलंका के बीच स्थित है। बालू के टीले पर मौजूद इस जगह की लंबाई केवल 50 गज है। एक समय में धनुषकोडी में स्कूल, कॉलेज, रेलवे स्टेशन, पोस्ट ऑफिस, घर, गाड़ी और चर्च सभी कुछ हुआ करते थें। शहर की खूबसूरती देखने लायक हुआ करती थी। धनुषकोडी गांव श्रीलंका से महज 18 मील कि दूरी पर है।

बताया जाता है साल 1964 में आए खतरनाक चक्रवात से धनुषकोडी पूरी तरह से उजड़ गया था। इसमें सौ से अधिक यात्रियों वाली एक रेलगाड़ी समुद्र में डूब गई थी और जो पंबन से लेकर धनुषकोडी तक एक रेलवे कि लाइन हुआ करती थी वो भी विलुप्त हो गयी। हम अगर इतिहास के पन्नों को पलटे तो यह पता चलता है कि 17 दिसम्बर 1964 को अंडमान समुद्र में एक दवाब बना जो 19 दिसंबर तक एक चक्रवात का रूप ले लिया। इसके बाद 21 दिसंबर को इस चक्रवात की गति 250 से 350 मील प्रति घंटे हो गई जो एक सीध में पश्चिम की ओर बढ़ने लगी। 22 और 23 दिसम्बर की आधी रात को यह धनुषकोडी से टकरा गया। उस समय समुद्र की लहरें तकरीबन 24 फुट ऊंची उठ रहीं थी। इस चक्रवात ने भयंकर तांडव मचाया, जिसमें सब कुछ नाश हो गया। **शेष पेज न. 46 पर ...**

भारत के 12 ऐसे जबर्दस्त फैक्ट्स जिन्हें आप शायद ही जानते हों

भारत को किस्से और कहानियों का देश कहा जाता है। यहां पर एक बहुत प्रचलित पुरानी कहावत है कि कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी। भारत में इतनी कहानिया और रोचक बातें है कि सारी बातों के बारे में शायद लिख पाना किसी के लिए भी संभव नहींहोगा। फिर भी कुछ कोशिश की है कि हम आप तक कुछ फैक्ट्स के बारे में बता पाएं।

1. तैरता हुआ डाकघर

वैसे तो भारत में डाक का सबसे बड़ा नेटवर्क है। भारत में तकरीबन 1,55,015 डाकघर हैं। यहाँ पर एक अकेले डाकघर पर लगभग 7,175 लोगों की मदद हेतु हमेशा खड़ा रहता है। हमारे देश के ऐसे ही डाकघरों में से एक श्रीनगर के डल झील का डाकखाना भी शामिल है। यह एक अनोखे प्रकार का है क्योकि ये एक तैरता हुआ डाकघर है और इसकी शुरुआत साल 2011 में हुई थी।

2. कुंभ मेले की भीड़ अंतरिक्ष से भी दिखती थी

साल 2011 में संगम के तट पर आयोजित के कुंभ मेले में पूरी दुनिया की ऐसी भीड़ जुटी थी कि इस भीड़ को अंतरिक्ष से भी देखा गया था। जिसकी तस्वीर उस समय सोशल मीडिया पर काफी प्रचलित हुई थी।

3. दुनिया में सबसे अधिक बारिश वाली जगह भारत में है

भारत के मेघालय प्रांत के खासी पहाड़ियों पर स्थित मौसिनराम नामक जगह में इतनी बारिश होती है कि एक आम आदमी कल्पना भी नहीं कर सकता। इससे पहले यह रिकॉर्ड मेघालय के चेरापूंजी के नाम हुआ करता था।

4. बांद्रा-वर्ली समुद्री जोड़ में पृथ्वी के व्यास के बराबर स्टील लगा है

बान्द्रा-वर्ली समुद्रसेतु को बनाने में 2,57,00,000 घंटे लगे थे और इसका कुल भार 50,000 अफ्रीकी हाथियों के बराबर है। यह मानव कला का एक अनोखा नमूना है।

5. दुनिया का सबसे ऊंचा क्रिकेट ग्राउंड

चायल हिमाचल प्रदेश का एक ऐसा स्थान है जहां एक मिलिट्री स्कूल भी है। इसे साल 1893 में बनाया गया था और 2,444 मीटर के ऐल्टिट्यूड पर यह पूरी दुनिया का सबसे ऊंचा क्रिकेट ग्राउंड है।

6. शैम्पू का आविष्कार भारत में हुआ है

शायद आप इस फैक्ट को जानकर थोड़े अचंभित हों, क्योंकि भारत में पहले लोग मिट्टी से बाल धुलने में यकीन रखते थे, मगर शैम्पू शब्द संस्कृत भाषा के चंपू शब्द से निकला गया है। चंपू का अर्थ मसाज से है।

7. भारत की राष्ट्रीय कबड्डी टीम ने साले वर्ल्ड कप जीते हैं

वैसे तो हम सभी क्रिकेट के दीवाने हैं और वर्ल्ड कप का नाम आते ही क्रिकेट ही याद आ ही जाती है, जैसे कभी हॉकी याद आया करता था। लेकिन एक आश्चर्य वाली बात ये भी है कि हमने क्रिकेट में सारे वर्ल्ड कप तो नहीं जीते मगर भारत की पुरुष व महिला कबड्डी टीम ने अब तक संपन्न हुए सारे वर्ल्ड कप जीते हैं।

8. चंद्रमा पर भारत ने ही पहलेपहल पानी खोजा था

यह बात सितंबर 2009 की है जब भारत के चंद्रयान नामक सैटेलाइट के द्वारा चंद्रमा के मिनरलॉजी मैपर की मदद से चंद्रमा के सतह पर पहली बार पानी खोज निकाला था।

9. स्विटजरलैंड में साइंस डे भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को समर्पित है

हमारे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम साहब की इज्जत सिर्फ हमारे देश में ही नहीं है, बल्कि दुनिया भर है और उसी प्रकार पूरी दुनिया में उनके दीवाने भी हैं। 26 मई को स्विटजरलैंड में साइंस डे के तौर पर मनाया जाता है।

10. भारत के पहले राष्ट्रपति सिर्फ आधी सैलरी लेते थे

भारत के पहले राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद को आजाद भारत का एक ऐसा राष्ट्रपति माना जाता है जो अपने जीवन में पुरे समय जमीन से जुड़ा रहे। अपने खांटीपन के लिए मशहूर यह शख्स राष्ट्रपति को दी जाने वाली तनख्वाह 10,000 का सिर्फ 50 फीसद हिस्सा ही लेते थे।

11. भारत के पहले रॉकेट को साइकिल पर ले जाया गया था

भारत का पहला रॉकेट इतना हल्का बनाया गया था कि इसे लॉन्चिंग स्टेशन पर साइकिल के करियर पर रख कर ले जाया गया था।

12. भारत में हाथियों के लिए स्पा बाथ की व्यवस्था है

भारत में हाथियों को धार्मिक तौर पर भी मान्यता दी जाती है। यहां लोग उन्हें बेहद सम्मान से देखते हैं। केरल में ऐसी कई जगहें हैं जहां हाथी को नहला-धुला कर चमकाया जाता है।

शाहिद अफरीदी ने कप्तान के रूप में रिकी पोंटिंग की तुलना में एमएस धोनी को दिया अधिक रेट

एमएस धोनी और रिकी पोंटिंग यकीनन क्रिकेट इतिहास के सबसे सफल कप्तानों में से दो हैं। उनके नाम पर दोनों विश्व कप खिताब हैं और उन्होंने अपनी टीमों को महान ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। 29 जुलाई को, पाकिस्तान के पूर्व ऑलराउंडर शाहिद अफरीदी को दोनों के बीच चयन करने के लिए कहा गया और उन्होंने कहा कि उनकी पिक धोनी होगी। अफरीदी ने यह भी खुलासा किया कि उन्होंने भारत के पूर्व कप्तान को क्यों चुना। उन्होंने कहा कि धोनी ने एक युवा टीम का खून बहाया था और इसीलिए वह उन्हें पोंटिंग से ज्यादा रेट देते हैं।

अफरीदी ने बुधवार को ट्विटर पर अपने प्रशंसकों के साथ एक प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया और एक उपयोगकर्ता ने उन्हें धोनी और पोंटिंग के बीच बेहतर कप्तान चुनने के लिए कहा।

अफरीदी ने जवाब में लिखा, "मैं धोनी की तुलना में धोनी को थोड़ा अधिक आंकता हूं, क्योंकि उन्होंने युवाओं से भरी एक नई टीम विकसित की है।"

धोनी ने 2011 में टी -20 विश्व कप के उद्घाटन के पहले 2011 में विश्व कप जीतने से पहले अपने स्थापित सितारों के बिना एक भारतीय टीम का नेतृत्व किया।

पोंटिंग, जिन्होंने 2003 और 2007 में लगातार विश्व कप खिताब के लिए ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी की, उन्हें पूर्ववर्ती स्टीव वॉ से एक अच्छी तरह से व्यवस्थित टीम मिली, और 2000 के दशक के दौरान ऑस्ट्रेलिया के वर्चस्व को अच्छी तरह से आगे बढ़ाया।

UAE में 19 सितंबर को शुरू होगा IPL 2020

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का 13 वां संस्करण 19 सितंबर को संयुक्त अरब अमीरात में शुरू होगा और 8 नवंबर तक जारी रहेगा, शुक्रवार को आईपीएल के अध्यक्ष बृजेश पटेल ने पुष्टि की।

पटेल ने को बताया, "प्रशंसक 19 सितंबर से 8 नवंबर तक पूरे टूर्नामेंट का आनंद लेंगे और संचालन परिषद की बैठक में फ्रेंचाइजी के साथ आगे की कार्रवाई पर चर्चा की जाएगी।"

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) द्वारा इस वर्ष के पुरुषों के टी 20 विश्व कप के स्थगित होने से आईपीएल 2020 को मंच देने के लिए बहुत अधिक आवश्यक खिड़की प्रदान की गई।

आईपीएल 2020 संस्करण का निर्धारण, खिलाड़ियों के लिए प्रशिक्षण शिविर, और मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) पर चर्चा उन विषयों में से है, जिनकी चर्चा आगामी आईपीएल गवर्निंग काउंसिल की बैठक में की जाएगी।

गुरुवार को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने बताया कि टीमों और बायो बबल प्रशिक्षण सुविधाओं के लिए एसओपी, टूर्नामेंट की शिफ्टिंग, इसके कार्यक्रम और प्रारूप और प्रशिक्षण शिविर, यात्रा, और प्रवास पर आईपीएल के दौरान चर्चा की जाएगी। जीसी बैठक। जिन अन्य मामलों पर चर्चा की जानी है वे परिचालन पहलू हैं, खिलाड़ियों और अधिकारियों के लिए डाउनलोड करने के लिए डीएक्सबी ऐप और ब्रॉडकास्टर से संबंधित मुद्दों पर चर्चा।

इस साल के आईपीएल को 29 मार्च से शुरू किया गया था, लेकिन टूर्नामेंट को कोरोनोवायरस महामारी के कारण अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था।

इससे पहले, आईपीएल गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष बृजेश पटेल ने पुष्टि की कि लीग का 13 वां संस्करण यूएई में खेला जाएगा।

ये स्किनकेयर और हेयरकेयर टिप्स आपको मानसून की किसी भी चिंता से निपटने में मदद कर सकते हैं

यदि आपने हमारी उम्र की कहानियों के लिए हमारे स्किनकेयर को पढ़ा है, तो आप जानते हैं कि आपके बड़े होने के साथ-साथ आपकी दिनचर्या के लिए यह कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन यह सिर्फ उम्र नहीं है जो आपकी दैनिक त्वचा और बालों के रखरखाव में एक कारक है। विभिन्न मौसम नमी और तापमान में बदलाव लाते हैं, यह अपने साथ कई त्वचा और बालों के झड़ने भी लाता है।

बाल अपने स्वयं के मूड के लिए जाते हैं, चमकदार से घुंघराले घंटे के मामले में चिकना करने के लिए। त्वचा के संक्रमण भी आम हो जाते हैं। इनसे आपको निजात दिलाने के प्रयास में, हमने मुंबई के सेलिब्रिटी डर्मेटोलॉजिस्ट डॉ। जयश्री शरद से अपनी सबसे अच्छी स्किनकेयर और हेयरकेयर प्रैक्टिस को साझा करने के लिए प्राप्त किया, जिससे आप इस उमस भरे बरसात के मौसम में आने वाले हर एक मुद्दे से निपट सकें।

1: फंगल संक्रमण

"ये बारिश के मौसम में अधिक आम हैं, मुख्य रूप से गीले कपड़े और पसीने के कारण। बगल, कमर, स्तनों के नीचे की त्वचा और हमारे पैर की उंगलियों के बीच का क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित होता है। "

उपाय

"स्नान करने के बाद, अपने पैरों, अंडरआर्म्स, शरीर के सिलवटों और कमर पर कुछ एंटी-फंगल पाउडर को धूल दें। सोते समय एक क्लोट्रिमाज़ोल या किटोकोनाज़ोल आधारित क्रीम लागू करें।

2: बदबूदार पैर

गीले मोज़े, जूते या दिन के माध्यम से कवर किए गए जूते [कर सकते हैं] एक नम वातावरण बना सकते हैं जो कवक, खमीर और बैक्टीरिया को जन्म देता है।"

उपाय

"अपने पैरों को साबुन और पानी से धोएं यदि आप पोखर या बारिश के पानी के संपर्क में हैं। यदि आपके मोज़े आपके काम करने के तरीके पर गीले हो जाते हैं, तो घर के अंदर जब आप सूखे मोजे में बदल जाते हैं। अपने मोजे लगाने से पहले एंटी-फंगल डस्टिंग पाउडर लगाएं। रात में थोड़ा कवक विरोधी मरहम डाब करें। यदि स्थिति में सुधार नहीं होता है, तो कृपया त्वचा विशेषज्ञ से परामर्श करें। "

3: मुँहासे

"नमी हमारी त्वचा को पसीना लाती है और गंदगी और प्रदूषकों को अधिक आसानी से एकत्र करती है। यह बैक्टीरिया को आकर्षित करता है, जिससे फोड़े हो जाते हैं। "

उपाय

"जब आप घर के अंदर कदम रखते हैं, तो हमेशा गंदगी और गंदगी को धोने के लिए अपना चेहरा साफ करें। पसीने और धूल के कणों के संचय से बचने के लिए, लंबे समय तक बाहर रहने पर गीले पोंछे का उपयोग करें। रात में निओस्पोरिन की तरह एक एंटीसेप्टिक क्रीम लागू करें। "

4: रूसी और सुस्त बाल

"सामान्य और तैलीय बाल इस मौसम में चिकना हो जाते हैं, जबकि शुष्क बाल मुरझा जाते हैं। रूसी के कारण खोपड़ी में खुजली और परतदार होने की संभावना है।

उपाय

"रूसी से निपटने के लिए दो प्रतिशत केटोकोनाज़ोल और जिंक पाइरिथियोन युक्त शैम्पू का उपयोग करें। अपने बालों को नियमित रूप से धोएं और कंडीशन करें। अगर आपके बाल घुंघराले हैं तो एंटी-फ्रिज़ सीरम का प्रयोग करें। "

30 के एक एसपीएफ़ के साथ एक जल-प्रतिरोधी सनस्क्रीन लगाने के बिना बाहर न निकलें। एक बादल दिन पर भी पराबैंगनी किरणें मौजूद हैं। हो सके तो अपने ऑफिस में कपड़ों का बदलाव रखें। फंगल या बैक्टीरियल त्वचा संक्रमण को रोकने के लिए आपकी त्वचा को सूखा रखना महत्वपूर्ण है। मानसून में सिंथेटिक कपड़े बेहतर होते हैं। उन्हें धोना और पहनना आसान है, शायद ही कभी इस्त्री की आवश्यक

ता होती है और जल्दी सूख जाती है। गीले बालों को न बांधें क्योंकि इससे जूँ, फंगल संक्रमण और रूसी हो जाएगी। नहाने के बाद आपके शरीर पर एंटी-फंगल पाउडर डस्ट करें, और पाउडर को अपने बैग में रखें। इस मौसम में त्वचा के टैग, मोल्स और मस्सों को हटाना चाहिए। पोस्ट ट्रीटमेंट मार्क्स या ब्लमिश की कोई संभावना नहीं है। इस मौसम में त्वचा को फिर से जीवंत या चमकदार बनाने के लिए पील को सबसे अच्छा किया जाता है, जब आपको सीधे धूप के संपर्क से बचने की आवश्यकता होती है।

नल और दरवाजे के हैंडल्स भी हो सकते हैं खतरनाक, ऐसे करें साफ

से बचाव की तमाम हिदायतों के बीच साफ-सफाई पर सबसे ज्यादा जोर दिया जा रहा है। इस वायरस से बचाव का एकमात्र उपाय है सफाई। घर की साफ-सफाई, घर में आई चीजों की सफाई, व्यक्तिगत हाइजीन- ये सभी बातें कोरोना से बचने के लिए मायने रखती हैं। जितनी सफाई और सुरक्षा नियमों का आप पालन करेंगे, उतना ही ये वायरस आपसे दूर रहेगा।

हम अपना सबसे ज्यादा वक्त अपने घर पर ही बिताते हैं। ऐसे में घर की साफ-सफाई का विशेष तौर पर ध्यान रखने की जरूरत है, क्योंकि घर की ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें साफ करना बेहद जरूरी है। लेकिन हम उन्हें ही नजरअंदाज करते हैं, जैसे दरवाजे, दरवाजे के हैंडल, नल, फ्रिज का हैंडल, टीवी रिमोट आदि।

तो आइए जानते हैं कि कैसे करें घर की इन चीजों की सफाई-

घर में फ्रिज के हैंडल व टीवी रिमोट को साफ करने के लिए आप हल्के गर्म पानी में बैकिंग सोडा, नमक व सिरका मिला लें। इस घोल से आप टीवी के रिमोट व फ्रिज के हैंडल को साफ कर सकते हैं।

सांद्रता वाला ब्लीच में पानी मिलाएं। ध्यान रहे, इसका असर आपकी आंखों पर नहीं पड़ना चाहिए। इस घोल से सफाई करने से पहले अपने हाथों में ग्लव्स जरूर पहन लें। इसके बाद ही किसी भी चीज को साफ करें। घर में सबसे पहले उन स्थान को साफ करें, जहां अक्सर आपके हाथ जाते हैं, जैसे खिड़की-दरवाजों के हैंडल और कुंडी, फ्रिज का हैंडल, मेज-कुर्सी, नल, टीवी के रिमोट, मोबाइल, लैपटॉप, की बोर्ड, बच्चों के खिलौने, डस्टबिन आदि। इनकी दिन में 2 से 3 बार सफाई जरूर करें। नल को साफ करने के लिए पानी में सिरका मिला लें और इस घोल से नल को साफ करें।

घर में आई हुई चीजों को पहले अच्छी तरह साफ करें, इसके बाद ही उन चीजों का इस्तेमाल करें।

यदि कहीं बाहर से आप आ रहे हैं, तो अपने कपड़ों को चेंज करें इन्हें हल्के गर्म पानी में डिटॉल डालकर अच्छी तरह से साफ करें।

हरतालिका तीज मुहूर्त का समय, घर में कैसे करें पूजा?

आइए जानते हैं कि 2020 में हरतालिका तीज कब है व हरतालिका तीज 2020 की तारीख व मुहूर्त। हरतालिका तीज व्रत हिंदू धर्म में मनाये जाने वाला एक प्रमुख व्रत है। भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हरतालिका तीज मनाई जाती है। दरअसल भाद्रपद की शुक्ल तृतीया को हस्त नक्षत्र में भगवान शिव और माता पार्वती के पूजन का विशेष महत्व है। हरतालिका तीज व्रत कुमारी और सौभाग्यवती स्त्रियां करती हैं। विधवा महिलाएं भी इस व्रत को कर सकती हैं। हरतालिका तीज व्रत निराहार और निर्जला किया जाता है। मान्यता है कि इस व्रत को सबसे पहले माता पार्वती ने भगवान शंकर को पति के रूप में पाने के लिए किया था। हरतालिका तीज व्रत करने से महिलाओं को सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

हरतालिका तीज व्रत के नियम

हरतालिका तीज व्रत में जल ग्रहण नहीं किया जाता है। व्रत के बाद अगले दिन जल ग्रहण करने का विधान है।

-हरतालिका तीज व्रत करने पर इसे छोड़ा नहीं जाता है। प्रत्येक वर्ष इस व्रत को विधि-विधान से करना चाहिए।

-हरतालिका तीज व्रत के दिन रात्रि जागरण किया जाता है। रात में भजन-कीर्तन करना चाहिए।

-हर तालिका तीज व्रत कुंवारी कन्या, सौभाग्यवती स्त्रियां करती हैं। शास्त्रों में विधवा महिलाओं को भी यह व्रत रखने की आज्ञा है।

हरतालिका तीज व्रत पूजा विधि

हरतालिका तीज पर माता पार्वती और भगवान शंकर की विधि-विधान से पूजा की जाती है। इस व्रत की पूजा विधि इस प्रकार है..

हरतालिका तीज प्रदोषकाल में किया जाता है। सूर्यास्त के बाद के तीन मुहूर्त को प्रदोषकाल कहा जाता है। यह दिन और रात के मिलन का समय होता है।

-हरतालिका पूजन के लिए भगवान शिव, माता पार्वती और भगवान गणेश की बालू रेत व काली मिट्टी की प्रतिमा हाथों से बनाएं।

-पूजा स्थल को फूलों से सजाकर एक चौकी रखें और उस चौकी पर केले के पत्ते रखकर भगवान शंकर, माता पार्वती और भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित करें।

इसके बाद देवताओं का आह्वान करते हुए भगवान शिव, माता पार्वती और भगवान गणेश का षोडशोपचार पूजन करें।

-सुहाग की पिटारी में सुहाग की सारी वस्तु रखकर माता पार्वती को चढ़ाना इस व्रत की मुख्य परंपरा है।

-इसमें शिव जी को धोती और अंगोछा चढ़ाया जाता है। यह सुहाग सामग्री सास के चरण स्पर्श करने के बाद ब्राह्मणी और ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

-इस प्रकार पूजन के बाद कथा सुनें और रात्रि जागरण करें। आरती के बाद सुबह माता पार्वती को सिंदूर चढ़ाएं व ककड़ी-हलवे का भोग लगाकर व्रत खोलें।

हरतालिका तीज व्रत का पौराणिक महत्व

हरतालिका तीज व्रत भगवान शिव और माता पार्वती के पुनर्मिलन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार माता पार्वती ने भगवान भोलेनाथ को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तप किया था। हिमालय पर गंगा नदी के तट पर माता पार्वती ने भूखे-प्यासे रहकर तपस्या की। माता पार्वती की यह स्थिति देखकप उनके पिता हिमालय बेहद दुखी हुए। एक दिन महर्षि नारद भगवान विष्णु की ओर से पार्वती जी के विवाह का प्रस्ताव लेकर आए लेकिन जब माता पार्वती को इस बात का पता चला तो, वे विलाप करने लगी। एक सखी के पूछने पर उन्होंने बताया कि, वे भगवान शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तप कर रही हैं। इसके बाद अपनी सखी की सलाह पर माता पार्वती वन में चली गई और भगवान शिव की आराधना में लीन हो गई। इस दौरान भाद्रपद में शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन हस्त नक्षत्र में माता पार्वती ने रेत से शिवलिंग का निर्माण किया और भोलेनाथ की आराधना में मग्न होकर रात्रि जागरण किया। माता पार्वती के कठोर तप को देखकर भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिए और पार्वती जी की इच्छानुसार उन्हें पत्नी के रूप में स्वीकार किया।

तभी से अच्छे पति की कामना और पति की दीर्घायु के लिए कुंवारी कन्या और

सौभाग्यवती स्त्रियां हरतालिका तीज का व्रत रखती हैं और भगवान शिव व माता पार्वती की पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं।

मेष-राशि वाले जातकों के लिए यह माह आर्थिक उन्नति वाला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्त होगी। कृषि में उतार-चढ़ाव रहेगा। नौकरी में अधिकारी वर्ग से परेशानी आएगी। माता के स्वास्थ्य में तकलीफ रहेगी। किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी। ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। तकलीफ तो आएगी, परंतु शीघ्र सुधार हो जाएगा।

वृषभ- राशि वाले जातकों के लिए यह माह आर्थिक विकास वाला रहेगा। व्यापार अच्छा चलेगा। कृषि भी अच्छी रहेगी। नौकरी में साथियों से परेशानी रहेगी। पिता को समाज से प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। इससे आपको भी कई प्रकार के लाभ मिलेंगे। बहन के परिवार में आर्थिक परेशानी आएगी। पत्नी से सहयोग प्राप्त होगा।

मिथुन- राशि वाले जातकों के लिए यह माह स्थान परिवर्तन वाला रहेगा। व्यापार में हानि हो सकती है। कृषि मध्यम रहेगी। भाई को नौकरी में उन्नति मिलेगी। रिश्तेदारों से मनमुटाव की स्थिति बन सकती है, ध्यान रखें। पिता को किसी धार्मिक स्थान से लाभ मिलेगा। माता को स्वास्थ्य की तकलीफ रहेगी। ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क- राशि वाले जातकों के लिए यह माह राजनीतिक लाभ वाला रहेगा। व्यापार मध्यम रहेगा। कृषि में लाभ मिलेगा। नौकरी में उन्नति होते-होते रुक सकती है। भाई से मानसिक तनाव मिलेगा। पत्नी के स्वास्थ्य में तकलीफ रहेगी। मामा पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। किसी रिश्तेदार से अचानक लाभ प्राप्त होगा। माता के ससुराल पक्ष में सम्मान बढ़ेगा।

सिंह- राशि वाले जातकों के लिए यह माह राजनीतिक सफलता वाला रहेगा। व्यापार सामान्य रहेगा। नौकरी में उन्नति होगी। कृषि में उतार-चढ़ाव रहेगा। खुद को स्वास्थ्य की तकलीफ रहेगी। साथियों से परेशानी आएगी। बहन से सहयोग प्राप्त होगा। आर्थिक विकास में उलझन आएगी। किसी दूसरे प्रदेश से आमदनी में वृद्धि होगी।

कन्या- राशि वाले जातकों के लिए यह माह कोर्ट-कचहरी की विजय प्राप्ति वाला रहेगा। व्यापार अच्छा चलेगा। कृषि सामान्य रहेगी। नौकरी में अधिकारी वर्ग से सहयोग मिलेगा। माता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। किसी रिश्तेदार से आर्थिक व मानसिक सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी को नौकरी में उन्नति मिलेगी। भाई से भूमि अधिग्रहण के कारण तकलीफ आएगी।

तुला- राशि वाले जातकों के लिए यह माह आर्थिक परेशानी वाला रहेगा। व्यापार में परेशानी आएगी। कृषि सामान्य रहेगी। नौकरी में साथियों से परेशानी आएगी। किसी अनजान व्यक्ति के साथ नया कार्य होगा जिससे थोड़ा लाभ मिलेगा। जीवनसाथी को नौकरी में उन्नति मिलेगी। ससुराल पक्ष में आर्थिक स्थिति में परेशानी आएगी। माता के स्वास्थ्य में तकलीफ रहेगी।

वृश्चिक- राशि वाले जातकों के लिए यह माह पारिवारिक सुख वाला रहेगा। व्यापार अच्छा रहेगा। कृषि मध्यम रहेगी। नौकरी में उन्नति के अवसर मिलेंगे। पिता को समाज में उन्नति मिलेगी। ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। मित्र से मुलाकात होगी, जो संकट से निपटने में मदद वाली रहेगी। माता के स्वास्थ्य में तकलीफ रहेगी। बहन को आर्थिक उन्नति मिलेगी।

धनु- राशि वाले जातकों के लिए यह माह सामाजिक प्रतिष्ठा वाला रहेगा। व्यापार में सफलता हासिल करने में उलझन रहेगी। नौकरी में पदोन्नति होगी। कृषि सामान्य रहेगी। बहन के परिवार में आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। पत्नी से सहयोग प्राप्त होगा। खुद को स्वास्थ्य में तकलीफ रहेगी। किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी। माता से मनमुटाव हो सकता है, ध्यान दें।

मकर- राशि वाले जातकों के लिए यह माह संतान सुख वाला रहेगा। कृषि अच्छी रहेगी। व्यापार ठीक-ठीक रहेगा। नौकरी में अधिकारी वर्ग से सहयोग प्राप्त होगा। पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। किसी अनजान व्यक्ति से तकलीफ हो सकती है। ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। भाई से मानसिक तनाव की स्थिति बन सकती है।

कुंभ- राशि वाले जातकों के लिए यह माह संतान के सुख वाला रहेगा। व्यापार में लाभ मिलेगा। कृषि मध्यम रहेगी। नौकरी में उन्नति होगी, परंतु खर्च बढ़ेगा। किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी जिससे संकट से निपटने में मदद मिलेगी। माता-पिता के स्वास्थ्य में तकलीफ रहेगी। किसी विदेश से अचानक लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन- राशि वाले जातकों के लिए यह माह पत्नी की उन्नति वाला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव रहेगा। कृषि में अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी में परेशानी आएगी। भाई से भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में उलझन आएगी। माता को स्वास्थ्य की तकलीफ रहेगी। राजनीति से लाभ मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में संतान से कष्ट हो सकता है।

राजस्थान में राजनीतिक उठापटक के बीच गहलोत सरकार की सत्र बुलाने की तीसरी अर्जी पर राज्यपाल के जवाब का इंतेजार

राजस्थान में सियासी घमासान के बीच विधानसभा का सत्र बुलाने को लेकर सरकार और राज्यपाल के बीच खींचतान जारी है। पहले दो प्रस्ताव खारिज होने के बाद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मंगलवार को तीसरी अर्जी राजभवन भेजी। अब राज्यपाल के जवाब का इंतजार है। तीसरी बार फाइल लौटाने की संभावना कम है। राज्यपाल पिछले 6 दिन से चल रहे टकराव को खत्म करने के मूड में हैं। ऐसे में 31 जुलाई या फिर से किसी और तारीख से सत्र बुलाने की मंजूरी दे सकते हैं।

रिया चक्रवर्ती के खिलाफ सुशांत सिंह राजपूत के पिता दर्ज कराई FIR

सुशांत सिंह राजपूत के पिता केके सिंह ने पटना के राजीवनगर थाना में बेटे की आत्महत्या मामले में एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। उन्होंने आरोप लगाया है कि रिया ने सुशांत से पैसे लिए और उसे आत्महत्या के लिए उकसाया। बता दें कि सुशांत की मौत के एक दिन पहले तक रिया चक्रवर्ती उनके साथ ही रह रही थीं। अब एक्टर के पिता के इस कदम पर कंगना रनौत ने भी उनका साथ दिया है। कंगना रनौत ने एक ट्वीट किया है, जिसमें उन्होंने अपनी बात कही है।

कंगना रनौत लिखती हैं कि रिया पिछले 6 महीने से सुशांत के साथ थीं। उसने सुशांत की रहस्यमयी मौत से बस 2 दिन पहले ही महेश भट्ट को उसके मनोचिकित्सक के तौर पर हायर किया था। खुशी है कि अब इस पूरे मामले की जांच की जाएगी। बता दें कि कंगना सुशांत सुसाइड मामले पर शुरू से अपनी राय देती रही हैं।

भूमि पूजन पर रत्न जड़ित हरे वस्त्र पहनेंगे रामलला

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए 5 अगस्त को होने वाले भूमि पूजन की तैयारियां जोरों पर है। भूमि पूजन होने के बाद राम मंदिर का निर्माण भी शुरू हो जाएगा। मंदिर का निर्माण पूरा होने में तीन से चार साल का वक्त लगेगा। मंदिर निर्माण के शुभारंभ कार्यक्रम को लेकर शासन-प्रशासन एकजुट होकर मुस्तैद है। डेप्युटी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने तैयारी को लेकर समीक्षा बैठक की। भगवान राम, उनके भाई-लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न 5 अगस्त को राम मंदिर के 'भूमिपूजन' के अवसर पर रत्नजड़ित पोशाक पहनेंगे। रामदल सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष पंडित कल्की राम ने भगवान की मूर्तियों पर ये पोशाक पहनाएंगे। इन पोशाकों पर नौ तरह के रत्न लगाए गए हैं। भगवान के लिए वस्त्र सिलने का काम करने वाले भगवत प्रसाद ने कहा कि भगवान राम हरे रंग की पोशाक पहनेंगे। भूमि पूजन बुधवार को होना है और इस दिन का रंग हरा होता है।

कानपुर के चर्चित किडनैपिंग मामले ने लिया नया रूप, संजीत के पिता ने कहा नहीं मिला शव तो कर लूंगा आत्महत्या

कानपुर में लैब असिस्टेंट संजीत यादव के अपहरण और हत्या के मामले में पुलिस को अभी तक लाश नहीं मिली है. मृतक के पिता ने कहा कि अगर संजीत की लाश नहीं मिलती है तो हम आत्महत्या कर लेंगे. इस बीच मंगलवार को फॉरेंसिक टीम ने उस मकान की जांच की, जहां पर अपहरण के बाद संजीत को रखा गया था. पुलिस की माने तो इसी मकान में 26/27 जून की रात को संजीत यादव की हत्या की गई थी. फॉरेंसिक टीम को कमरे में जगह-जगह खून के धब्बे मिले हैं. जांच अधिकारी का दावा है कि अपराधियों ने कत्ल के बाद खून को धो दिया था, लेकिन हमारी जांच में खून के धब्बे मिल गए हैं. दो जगह खून के छींटे पड़े हैं. साथ ही एक साड़ी मिली है, जिस पर खून के धब्बे लगे हैं.

अयोध्या राम जन्म भूमि में प्रयोग वाले टाइम कैप्सूल क्या है ?

राम मंदिर के गर्भ गृह में जमीन के 200 फीट नीचे इतिहास को सुरक्षित रखने की खबरें आने के बाद से देश भर में टाइम कैप्सूल की चर्चा हो रही है। हर कोई इस टाइम कैप्सूल को लेकर उत्साहित है और इसके बारे में ज्यादा से ज्यादा बातें जानना चाह रहा है। टाइम कैप्सूल एक कंटेनर की तरह होता है जिसे विशिष्ट सामग्रियों से तैयार किया जाता है। टाइम कैप्सूल हर तरह के मौसम का सामना करने में सक्षम होता है, उसे जमीन के अंदर काफी गहराई में दफनाया जाता है। **शेष पेज न. 46 पर ...**

इस रक्षाबंधन पर अपने कैदी भाइयों की कलाई पर राखी नहीं बांध पाएंगी बहनें

जेलों में कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों के मद्देनजर उत्तर प्रदेश सरकार ने रक्षाबंधन पर्व पर कैदियों की बहनों से होने वाली मुलाकात पर रोक लगा दी है। आधिकारिक सूत्रों ने कहा कि ऐसा कोरोना संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिये एहतियात के तौर पर किया गया है हालांकि बहनें जेल में बंद भाइयों को राखी और रोली लिफाफे में बंद कर दे सकती है।

इसके लिये हर जेल में विशेष काउंटर की व्यवस्था की गई है। मिष्ठान आदि देने की मनाही है। एक अगस्त शाम चार बजे तक जेल के गेट पर बहने एक लिफाफे में कैदी का नाम लिखकर राखी और रोली दे सकती है। **शेष पेज न. 46 पर**

कोरोना काल में बिहार में दो कंपनियां करेंगी 350 करोड़ का निवेश

आपदा के इस दौर में उद्योग जगत के लिए अच्छी खबर है। बिहार सरकार द्वारा अपनी औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन नीति को और आकर्षक बनाने का असर दिखने लगा है। कोविड काल में नए निवेशकों ने बिहार के द्वार पर दस्तक देनी शुरू कर दी है। बिहार में दो कंपनियां राज्य में साढ़े तीन सौ करोड़ से अधिक का निवेश करेंगी।

मध्य प्रदेश की एक पाइप निर्माता कंपनी यहां 300 करोड़ से ज्यादा का निवेश करने को तैयार है। वहीं बिहार की ही एक बिस्कुट निर्माता कंपनी भी यहां एक बड़ा प्लांट लगाना चाहती है। **शेष पेज न. 46 पर**

राम मंदिर निर्माण के लिए सीतामढ़ी के पांच मंदिरों की मिट्टी और उज्जैन महाकाल से भेजा गया भस्म

राम मंदिर के लिए बद्रीनाथ धाम से मिट्टी और अलकनंदा का पवित्र जल निकल गया. वहीं, राम मंदिर के शिलान्यास के लिए मां जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी से भी मिट्टी भेजी गई है. उत्तर प्रदेश के अयोध्या में राम मंदिर भूमि पूजन 5 अगस्त को होगा. भूमि पूजने के लिए देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अयोध्या जाएंगे. राम मंदिर के लिए बद्रीनाथ धाम से मिट्टी और अलकनंदा का पवित्र जल निकल गया. वहीं, राम मंदिर के शिलान्यास के लिए मां जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी से भी मिट्टी भेजी गई है. **शेष पेज न. 46 पर**

गोरखपुर किडनैपिंग मामले में पकडे गए 5 अपराधियों पर एनएसए लगाने की तैयारी

गोरखपुर में किडनैपरों ने एक करोड़ के लिए एक नाबालिग को अगवा कर मार डाला. पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है. साथ ही आरोपियों पर एनएसए लगाने की तैयारी कर ली गई है. त्तर प्रदेश के कानपुर का लैब असिस्टैंट की किडनेपिंग और मर्डर केस अभी लोग भूले भी नहीं थे कि गोरखपुर से किडनैपरों ने एक करोड़ के लिए एक नाबालिग को अगवा कर मार डाला. इस मामले पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है. साथ ही आरोपियों पर एनएसए लगाने की तैयारी कर ली गई है.

गोरखपुर के पिपराइच थाना क्षेत्र के जंगल छत्रधारी गांव के नाबालिग की हत्या मामले में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सख्त रुख अपनाते हुए पुलिसकर्मियों की जवाब तय करने और मामले की सुनवाई फास्ट ट्रैक कोर्ट में करने का आदेश दिया है. बच्चे की हत्या के बाद परिवार में मातम है और लोग डरे हुए हैं.

पांचवीं में पढ़ने वाला बलराम गुप्ता रविवार दोपहर 12 बजे घर से खाना खाने के बाद दोस्तों के साथ खेलने गया था, लेकिन तीन बजे एक फोन कॉल से पूरा घर हिल गया. पता चला कि उसका अपहरण कर लिया गया है और एक करोड़ रुपये की फिरौती मांग गई है. पुलिस के हाथ कुछ ठोस नहीं लग रहा था. जैसे-जैसे वक्त गुजर रहा था उम्मीदें कमजोर पड़ रहीं थी और फिर वो मनहूस खबर आई जिसे कोई सुनना नहीं चाहता था. अपहरणकर्ताओं ने बच्चे की हत्या कर लाश गांव के पास ही नाले में फेंक दी थी. पुलिस ने बच्चे की लाश बरामद कर ली. गले में निशान मिले हैं जो इशारा करते हैं कि गला दबाकर हत्या की गई है.

मॉडर्ना की वैक्सीन ने वायरस को रोका बंदरों पर शोध का दिखा सकारात्मक परिणाम

कोरोना वायरस कहर के बीच वैक्सीन को लेकर एक बार फिर से बड़ी उम्मीद जगी है। कोरोना वायरस को लेकर मॉडर्ना की वैक्सीन बंदरों पर हुए ट्रायल में पूरी तरह से कारगर साबित हुई है। न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित एक अध्ययन में कहा गया है कि अमेरिका की बायोटेक फर्म मॉडर्ना की कोविड-19 वैक्सीन ने बंदरों पर हुए ट्रायल में एक मजबूत इम्यून रिस्पॉन्स विकसित किया है। साथ ही यह कोविड-19 वैक्सीन बंदरों की नाक और फेफड़ों में कोरोना वायरस को अपनी कॉपी बनाने से रोकने में भी सफल रही।

स्टडी के मुताबिक, वैक्सीन ने वायरस को बंदर के नाक में कॉपी करने से रोका और यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण इसलिए भी है क्योंकि इससे संक्रमण का दूसरों तक फैलना रुक जाता है। यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि जब ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी की वैक्सीन का बंदरों पर ट्रायल हुआ था, तब ठीक इसी तरह के परिणाम सामने नहीं आए थे। हालांकि, उस वैक्सीन ने वायरस को जानवरों के फेफड़ों में प्रवेश करने और उन्हें बहुत बीमार होने से रोक दिया था।

मौसम बदलने से नहीं रुकेगा कोरोना WHO

कोरोना वायरस पर WHO ने एक बार फिर लोगों को सचेत किया है. WHO का कहना कि लोगों को किसी तरह की गलतफहमी में नहीं रहना चाहिए कि कोरोना वायरस एक मौसमी बीमारी है जो मौसम बदलने के साथ कम हो जाएगी. विश्व स्वास्थ्य संगठन की प्रवक्ता मार्गरेट हैरिस ने एक वर्चुअल ब्रीफिंग में कहा कि कोरोना वायरस महामारी एक बड़ी लहर है.

हैरिस ने उत्तरी गोलार्ध में गर्मी के मौसम में इस वायरस को लेकर किसी भी तरह की लापरवाही ना करने की भी चेतावनी दी है. हैरिस ने कहा कि कोरोना वायरस किसी आम इन्फ्लूएंजा की तरह नहीं है, जो मौसम बदलने के साथ कम हो जाए.

WHO के अधिकारियों ने हॉन्ग कॉन्ग में दोबारा COVID-19 के बढ़ रहे मामलों को लेकर भी चिंता जताई. उन्होंने कहा कि ये वायरस इंसानों के नियंत्रण के बाहर है, हालांकि हम एक साथ मिलकर इसे फैलने से रोक सकते हैं.

राफेल के आगे बौना है चीन का J-20

भारतीय वायुसने का पूर्व प्रमुख एयर चीफ मार्शल बी एस धनोआ (रिटायर्ड) बी एस धनोआ ने कहा कि अगर चीन के साथ युद्ध की नौबत आती है तो राफेल बिना संदेह पूरा खेल बदल देगा। उन्होंने इंटरव्यू में कहा, अगर भारतीय वायुसेना दुश्मन के हवाई सुरक्षा को भेदने में कामयाब हुई तो होटन और गोंगर एयर बेस पर चीनी युद्ध विमानों का नेस्तनाबूद होना तय है।

भारतीय वायुसेना के पूर्व प्रमुख एयर चीफ मार्शल बी एस धनोआ (रिटायर्ड) के मुताबिक, राफेल से चाइनीज जे- 20 का मुकाबला तो दूर, वह राफेल की खूबियों के सामने इतना बौना है कि दोनों की तुलना करना ही बेमानी है। पूर्व एयर चीफ ने अंग्रेजी अखबार हिंदुस्तान टाइम्स से बातचीत में बेहिचक कहा कि राफेल फाइटर जेट्स, चीन के जे- 20 विमानों से बहुत ज्यादा आला दर्जे के हैं। उन्होंने राफेल की खूबियां गिनाते हुए कहा कि यह इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर टेक्नॉलजी के लिहाज से दुनिया में सर्वोत्तम है, इसमें Meteor मिसाइल लगे हैं जो रेडार से गाइड होते हैं और जे बियॉन्ड विजुअल रेंज एयर टु एयर मिसाइल (BVRAAM) हैं। भारत के राफेल में हवा से जमीन पर मार करने वाले बेहद घातक हथियार SCALP हैं जो पहाड़ी और ऊंचाई वाले इलाकों में चीन के पास उपल हर किसी हथियार पर भारी पड़ने वाले हैं।

रूस दुनिया की पहली कोरोना वैक्सीन को मंजूरी देने को तैयार

कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया की आर्थिक और सामाजिक तौर से कमर तोड़ कर रख दी है. इस समय हर किसी को कोरोना की वैक्सीन आने का इंतजार है. इस बीच रूस से अच्छी खबर आई है. रूस दो हफ्तों से भी कम समय में दुनिया की पहली कोरोना वैक्सीन को मंजूरी दे सकता है. ये जानकारी सीएनएन ने अपनी रिपोर्ट में दी है. रूसी अधिकारियों ने सीएनएन को बताया कि वे वैक्सीन की मंजूरी के लिए 10 अगस्त या उससे पहले की तारीख पर काम कर रहे हैं. इस वैक्सीन को मॉस्को स्थित गमलेया इंस्टीट्यूट ने बनाया है.

अधिकारियों के मुताबिक, वैक्सीन को पब्लिक यूज के लिए मंजूरी दी जाएगी. फ्रंटलाइन हेल्थकेयर वर्कर्स को पहले यह मिल जाएगी. लेकिन रूस ने अभी तक वैक्सीन के ट्रायल का कोई डेटा जारी नहीं किया है. इस वजह से इसकी प्रभावशीलता के बारे में टिप्पणी नहीं की जा सकती है. आलोचकों का कहना है कि जल्द वैक्सीन लाने का राजनीतिक दबाव है, जो रूस को एक वैश्विक वैज्ञानिक शक्ति के रूप में दर्शाने के लिए उत्सुक है. इसके अलावा वैक्सीन के अधूरे ह्यूमन ट्रायल पर भी सवाल उठ रहे हैं.

अब रूस ने चीन को दिया झटका

भारत के साथ तनाव के बाद से चीन को चारों तरफ से झटके लग रहे हैं। पहले अमेरिका ने ह्यूस्टन स्थित चीनी वाणिज्य दूतावास को बंद किया, वहीं अब रूस ने एलान किया है कि उसने चीन को दी जाने वाली एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम की आपूर्ति पर तत्काल रोक लगा दी है।

एस-400 उन्नत प्रणाली वाला मिसाइल सिस्टम है, जिसमें सतह से हवा में मार करने की क्षमता है। रूस ने डिलीवरी पर रोक लगाते हुए कहा है कि भविष्य में एस-400 की डिलीवरी को लेकर तिथि निर्धारित की जाएगी।

चीनी अखबार सोहू के हवाले से रूसी मीडिया एजेंसी यूएवायर ने रिपोर्ट दी, इस बार रूस ने घोषणा की है कि वह एस-400 मिसाइल सिस्टम को चीन को सौंपने पर रोक लगा रहा है।

सोहू अखबार में कहा गया है, उनका (रूस) कहना है कि इन हथियारों को पहुंचाने का काम काफी जटिल है, क्योंकि चीन को प्रशिक्षण के लिए सैन्य कर्मी और तकनीकी स्टाफ भेजना पड़ता। वहीं रूस को भी हथियारों को सेवा में लाने के लिए बड़ी संख्या में अपने तकनीकी कर्मियों को बीजिंग भेजना होता, जो कि मौजूदा दौर में काफी मुश्किल काम है।

रूस द्वारा मिसाइलों की आपूर्ति निलंबित किए जाने के बाद चीन का कहना है कि मॉस्को को यह कदम मजबूरी में उठाना पड़ा है, क्योंकि वह नहीं चाहता है कि कोरोना वायरस से निपटने में लगी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का ध्यान भटके।

भारत ने दुबारा चीनी ऍप्स पर बैन लगने से चीन ने दी प्रतिक्रिया

गलवान घाटी विवाद के बाद चीन के साथ जारी तनाव के बीच भारत आर्थिक मोर्चे पर लगातार चीन का झटके दे रहा है. इन आर्थिक प्रतिबंधों से चीन बौखला गया है. भारत सरकार ने पिछले दिनों टिक टॉक सहित 59 चाइनीज ऐप्स को प्रतिबंधित किया, उसके बाद इनके 47 क्लोन ऐप को भी अब प्रतिबंधित कर दिया है. इससे बौखलाए भारत में चीन के दूतावास से कड़ी प्रतिक्रिया आई है. दूतावास ने इसे कंपनियों के कानूनी अधिकार का उल्लंघन बताया है. भारत सरकार ने करीब 200 और चाइनीज ऐप्स को चिन्हित किया है. इन्हें भी प्रतिबंधित करने की योजना बन रही है. भारत के इन कदमों से बौखलाए चीन ने कहा है कि यह चीन की कंपनियों के कानूनी अधिकार का उल्लंघन है. इसके खिलाफ आवाज उठायी जायेगी. दूतावास ने कहा कि चाइनीज कंपनियों के हितों की रक्षा के लिए चीन हर संभव कदम उठायेगा. चीनी दूतावास की प्रवक्ता शी रोंग ने कहा, 'भारत सरकार ने जिस तरह से चीन की वीचैट समेत 59 ऐप को प्रतिबंधित किया है वह चीनी कंपनियों के कानूनी अधिकारों का उल्लंघन है और उनके हितों को प्रभावित करता है. हमने भारतीय पक्ष के सामने अपनी बात रखी है और उनसे कहा है कि वे इस कदम में सुधार करें. चीन की सरकार की तरफ से अपनी कंपनियों को पहले ही साफ-साफ निर्देश दिया गया है कि वे जिस भी देश में काम करें वहां के कानून का पूरी तरह से पालन करें.'

भारत में तेजी से फैल रहा कोरोना

भारत में अब कोरोना महामारी का संक्रमण दुनिया में सबसे तेजी के साथ बढ़ रहा है। ब्लूमबर्ग कोरोना वायरस ट्रैकर के मुताबिक पिछले सप्ताह के मुकाबले इसमें 20 फीसदी की बढ़ोतरी देखी गई है। कोरोना के कुल केसों के मामले में भारत दुनिया भर में अमेरिका और ब्राजील से ही पीछे है। भारत और ब्राजील में सबसे कम टेस्ट किए गए हैं। भारत में प्रति हजार लोगों पर 11.8 और ब्राजील में 11.93 टेस्ट किए जा रहे हैं। दूसरी तरफ अमेरिका में प्रति हजार लोगों पर 152.98 और रूस में 184.34 टेस्ट हो रहे हैं। देश में मंगलवार को लगातार छठे दिन कोरोना के 45 हजार से ज्यादा नए केस आए। 24 घंटों के दौरान आए मामलों की संख्या 47,704 थी। इस दौरान 654 की जान पर कोरोना भारी पड़ा तो 35,176 लोगों ने इसे मात देने में कामयाबी हासिल की। पिछले पांच दिनों से कोरोना को मात देने वालों की संख्या 30 हजार से ज्यादा रही है और रिकवरी रेट 64.23 फीसदी पर पहुंच गया है। सरकार का कहना है कि डेथ रेट भी अब 2.25 प्रतिशत हो गया है। देश के जिन राज्यों में सबसे ज्यादा कोरोना के मामले सामने आ रहे हैं, उनमें महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश और कर्नाटक शामिल हैं।

राफेल के बाद अमेरिका से जल्द ही MH-60 रोमियो हेलिकॉप्टर पहुंचेगा भारत, पनडुब्बियों का शिकारी है ये हेलीकॉप्टर

भारत और चीन के बीच बढ़ते तनाव के मद्देनज़र अमेरिका ने भारतीय नौसेना को जल्द से जल्द हेलिकॉप्टर की डिलिवरी देने का ऐलान कर दिया है. दक्षिणी चीन सागर में बीजिंग की बढ़ती दखल के मद्देनज़र अमेरिका के लिए दक्षिण एशिया में भारत से ज्यादा भरोसेमंद पार्टनर कोई और नहीं है. इसी के मद्देनज़र अमेरिका सबमरीन का शिकार करने वाले अपने हेलिकॉप्टर की डिलिवरी 2021 की शुरुआत में ही कर सकता है.

हेलिकॉप्टर बनाने वाली कंपनी लॉकहीड मार्टिन के अधिकारी विलियम एल ब्लेयर ने द ट्रिब्यून को बताया है कि यह बिक्री विदेशी मिलिट्री सेल के जरिए हो रही है. अमेरिका डिलिवरी जल्द से जल्द देने पर काम कर रहा है. उन्होंने दावा किया है कि जल्द ही इसे पूरा कर लिया जाएगा और अगले साल की शुरुआत में डिलिवरी कर दी जाएगी. बता दें कि 24 हेलिकॉप्टरों की डील का ऐलान फरवरी में किया गया था. हिंद महासागर में चीनी पनडुब्बियों की बढ़ती सक्रिया के मद्देनजर यह डील सैन्यशक्ति के लिहाज से काफी अहम मानी जा रही है. ब्लेयर से जब यह सवाल किया गया कि क्या भारत को चीन के साथ बढ़ते तनाव की वजह से जल्दी डिलिवरी चाहिए, इस पर ब्लेयर ने कहा, 'हमें भी जल्दी है. फरवरी में समझौता साइन हुआ था. यह डिलिवरी की रेकॉर्ड स्पीड होगी.'

ब्रिटेन ने कम खाने और जान बचाने की दी नसीहत

कोरोना वायरस के संक्रमण से तीन कैटेगरी के लोगों को ज्यादा खतरा होता है. कमजोर इम्यूनिटी, पहले से किसी गंभीर रोग के शिकार और मोटापे से परेशान लोगों को इससे ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है. आंकड़े बताते हैं कि कोविड-19 से होने वाली मौतों में मोटापा ग्रस्त लोगों की तादाद बहुत ज्यादा है. इसी वजह से ब्रिटेन की जूनियर हेल्थ मिनिस्टर हेलेन वाटली ने सोमवार को इसे लेकर लोगों से आग्रह किया. हेलेन वाटली ने ब्रिटेन की जनता से कहा, 'मोटापे की वजह से कोरोना वायरस से मौत का खतरा काफी ज्यादा बढ़ जाता है. इसलिए लोगों को कम खाना चाहिए और वजन घटाने पर ध्यान देना चाहिए.' उन्होंने कहा कि 40 से ज्यादा बीएमआई (बॉडी मास इंडेक्स) के साथ कोविड-19 से मौत का खतरा डबल हो जाता है.

ब्रिटेन में मोटापे की समस्या को जड़ से खत्म करने के लिए सरकार ने जंक फूड के विज्ञापन पर सख्त पाबंदी लगा दी है. 'हेल्थ एंड सोशल केयर डिपार्टमेंट' ने सोमवार को इस बारे में जानकारी दी. रात 9 बजे से पहले हाई फैट, शुगर और नमक वाले फूड के विज्ञापनों को टेलीविजन और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर बैन कर दिया गया है.

काशी के विद्वानों के द्वारा निकाले गए मुहूर्त में प्रधानमंत्री करेंगे भूमि पूजन

5 अगस्त प्रधानमंत्री मोदी राम मंदिर का शिलान्यास कर भूमि पूजन करेंगे, जिसके लिए काशी के प्रकांड विद्वानों ने मुहूर्त निकाला है।

काशी के विद्वान गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ द्वारा निकाले गए मुहूर्त में भूमि पूजन किया जाएगा और प्रधानमंत्री राम मंदिर की आधारशिला इसी मुहूर्त में रखेंगे।

इस संबंध में पंडित गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ ने बताया कि 5 अगस्त को बुधवार होने के कारण अभिजीत मुहूर्त के बाद वृषनवांस में मुहूर्त दिया गया है।

इस मुहूर्त का प्रारंभ 5 अगस्त को 12 बजकर 39 मिनट 20 सेकंड के बाद होता है वृषनवांस के बीच 32 सेकंड का यह अति महत्वपूर्ण मुहूर्त होता है।जिसके भीतर 16 वर्ग मिल रहे है, इसमें 1 पंञ्चचत्वारिशांश को छोड़कर सभी वर्ग शुभ मिल रहे है।

उन्होंने बताया कि वृषनवांस में पड़ने वाले 32 सेकेंड के माहेन्द्र मुहूर्त में शिलान्यास करने से सभी कार्य निरभिग्न और यशस्वी रूप से सम्पन्न होगा।

सचिन पायलट बन सकते है सीएम : सतीश पुनिया

राजस्थान में सीएम पद की उठापटक के बीच बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने बड़ा बयान जारी किया है। पुनिया ने कहा है कि कांग्रेस के बागी नेता सचिन पायलट परिस्थिति वश सीएम बन सकते हैं। पुनिया ने कहा कि सीएम बनने की योग्यता पायलट के अंदर है।

सतीश पूनिया ने यह बयान एक मीडिया के हवाले से दिया उन्होंने कहा कि सचिन पायलट राजस्थान के सीएम बनने के योग्य है।

सचिन पायलट की गतिविधियों को बताते हुए पुनिया ने कहा कि सचिन पायलट ने कुछ बातों को ध्यान में रखकर ही कदम उठाया है। उन्हें क्या और कैसे करना है यह उन्हें सोचना है। फिलहाल हम उनके एक्शन के बाद कुछ विचार करेंगे।

हालांकि हाईकोर्ट ने इस मामले में केंद्र सरकार को एक पक्षकार मानते हुए अपना फैसला सुना दिया है। कोर्ट ने सुनवाई की तारीख को आगे बढ़ाते हुए अपने फैसले में कहा कि राजस्थान की स्थिति को यथास्थिति बरकरार रखें।

मौके की स्थिति को देख कर बात करें तो राजस्थान में विधानसभा की कुल 200 सीटें हैं किसी भी दल को सरकार बनाने के लिए 101 विधायकों की जरूरत पड़ेगी।

फ़िलहाल राजस्थान में वर्तमान में कांग्रेस ने 102 विधायकों की सूची राज्यपाल को सौंप दी है वही यह बातें सामने आ रही हैं कि सचिन पायलट ग्रुप के पास तीन निर्दलीय विधायक सहित 22 विधायक हैं जबकि बीजेपी गठबंधन के पास 75 विधायकों का समर्थन है।

पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़ के हालात...

केंद्र सरकार ने असम के जिले में बाढ़ के मुद्दे को सुलझाने के लिए इस मामले को भूटान सरकार के साथ भी बातचीत कर सकता है अनशन के दौरान भूटान में बांधों अतिरिक्त पानी छोड़ने के कारण आसाम के सभी निचले जिलों खासकर बारपेटा नलबाड़ी और कोकरा झार है जैसे इलाकों में हर साल बाद आ जाता है।

निष्कर्ष:

हालांकि पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़ हर साल आते हैं पर जलस्तर साल दर साल बढ़ता जा रहा है और इसका कोई भी समाधान ढूंढ पाना मुश्किल होता जा रहा है। भूटान और चाइना जैसे देशों को भी साथ में आकर बांधों की पानी पर रोक लगाकर शायद हालत कुछ हद तक काबू में की जा सकती है। हर साल केंद्र सरकार, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल के लिए मॉनसून ढेर सारी चुनौतियां और परेशानियां लेते आता है। ऐसे में जरूरी है की ऐसी चुनौतियों को दूसरे देशों के साथ बैठकर राजकिय तरीके से इस मसले का हल शायद निकाल पाए।

रहस्यमयी धनुषकोडी जाने से...

सैकड़ों लोग मारे गए और रेलवे स्टेशन रेत में कहीं गुम हो गया। तब से यह जगह मनहूस सी हो गई। रात होते ही यहां का महौल बदल सा जाता है। लोग यहां से दूर चले जाते हैं और चारो तरफ अजीब-सा सन्नाटा पसर जाता है। जो कोई भी यहां रुकने की कोशिश करता है उसके साथ अजीबो-गरीब घटनाएं घटित होती हैं। लोगों ने यहां नकरात्मक शक्तियों को भी महसूस किया है। इस जगह की पौराणिक मान्यता भी है। बताया जाता है कि विभीषण के निवेदन करने पर भगवान राम ने अपने धनुष के एक सिरे से सेतु को तोड़ दिया था। इस कारण से इसका नाम धनुषकोटि पड़ा।

कोरोना काल में बिहार में दो...

इनके प्रस्ताव को बियाडा की जमीन आवंटन करने वाली समिति ने स्वीकृति दे दी है। अब मंजूरी के लिए इसे राज्य सरकार को भेजा गया है। कोरोना काल में लाखों की संख्या में श्रमिक और कामगार देश के विभिन्न राज्यों से बिहार लौटे हैं। राज्य सरकार इनके रोजगार के लिए सरकारी और निजी क्षेत्र में विभिन्न उपाय करने में जुटी है। बीते दिनों 12 माह में निवेश करने वालों को विशेष सुविधाएं देने का प्रावधान सरकार ने उद्योग नीति में शामिल किया था। इस केटेगरी में निवेश प्रस्ताव मिलने का सिलसिला शुरू हो गया है। मध्य प्रदेश के भोपाल की डीआरएम कंपोसाइट्स कंपनी यहां थर्मोप्लास्टिक पाइप बनाने की फैक्ट्री लगाने की इच्छुक है।

अयोध्या राम जन्म भूमि में प्रयोग वाले...

काफी गहराई में होने के बावजूद भी हजारों वर्षों तक न तो उसे कोई नुकसान पहुंचता है और न ही वह सड़ता-गलता है। धरती के अंदर तमाम उथल-पुथल को झेलने के बावजूद इसमें जंग तक नहीं लगती।टाइम कैप्सूल एक कंटेनर की तरह दिखता है जिसे विशेष प्रकार के तांबे (कॉपर) से बनाया जाता है और इसकी लंबाई करीब तीन फुट होती है। इस तांबे की विशेषता यह होती है कि यह सालों साल खराब नही होता है और सैकड़ों हजारों साल बाद भी इसे जब जमीन से निकाला जाएगा तो इसमें मौजूद सभी दस्तावेज पूरी तरह से सुरक्षित होंगे।

राम मंदिर निर्माण के लिए सीतामढ़ी

सीतामढ़ी के जानकी मंदिर, पुणौरा धाम, हलेश्वर स्थान और पंथपाकर धाम बगही मठ से मिट्टी भेजी गई. राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के अध्यक्ष महंथ नृत्य गोपाल दास जी महाराज को मिट्टी सौंपी जाएगी. जानकी जन्मोत्सव आयोजन समिति ने अयोध्या में शिलान्यास के दिन सीतामढ़ी में अपने-अपने घरों में महाआरती और दीप जलाने की अपील की है. सीतामढ़ी में मां जानकी जन्मोत्सव आयोजन समिति की अगुवाई में मां जानकी की प्राकट्य स्थली के प्रमुख पांच मंदिरों से मिट्टी भूमि पूजन के लिए भेजी गई है. इसमें जानकी मंदिर, पुनौरा मंदिर, हलेस्वरस्थान मंदिर, पंथपाकड़ स्थित सीता मंदिर और बगही धाम का नाम शामिल है.

राम मंदिर निर्माण के लिए सीतामढ़ी

मिलने वाले लिफाफों में बंद सामग्री को पूरी तरह सैनीटाइज करने के बाद कैदियों को दिया जायेगा। रक्षाबंधन वाले दिन जेलों में विशेष भोजन की व्यवस्था की जायेगी। इस संबंध में आदेश सभी जेल अधिकारियों को भेजे जा चुके है। गौरतलब है कि पिछले कुछ दिनों के दौरान राज्य की विभिन्न जेलों में कोरोना के कई मामले प्रकाश में आये है जिसके बाद विशेष सर्तकता बरती जा रही है।

विज्ञापन हेतु!

विज्ञापन और अपने पते पर मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए 09807505429, 08924881010 पर संपर्क करें!

आवश्यकता है!

FIVE PRODUCTIONS के अंतर्गत बनने वाली शॉर्ट फिल्म्स में अभिनय के लिए 09807505429, 08924881010 पर संपर्क करें!

GAMETE

GAMETE HEALTHCARE PVT LTD

AN ISO 9001:2015 & GMP CERTIFIED COMPANY

A wide range of :

Tablets | Capsules | Syrup | Injectables
Dry Syrups | Soft Gel | Capsules
Oral Liquids | Ointments Gel | Nasal Drops
Eye & Ear Drops | Suspensions | Beta-Cap etc

- **Excellent Packing and full Support of promotional inputs.**
- **Manufacturing pharmaceuticals products for multiple therapeutic fields.**
- **Company operates in compliance with WHO : GMP certification and customer satisfaction mean the most to us.**

For further details contact at :

Shop No. 3, Mira Gavthan Road, Distt. Thane, M.S.O. Mumbai

✆ 9415812557, 9415812001

खमरिया हास्पिटल

(ह्यूमन वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा संचालित)

आलोक नगर, हास्पिटल रोड, खमरिया, भदोही

(एलोपैथिक, होमियोपैथिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा सुविधायुक्त)

मोतियाबिन्द का ऑपरेशन करावें जीवन खुशहाल बनावें ।

विवेक मौर्य
मो.: 8874020504

रामधनी मौर्य
Mo. 9415625292

आँख का ऑपरेशन प्रतिदिन होता है

1. बिना टांके के मोतियाबिन्द का ऑपरेशन –

50 रूपये के पर्चे पर सभी जांच के बाद पामा, एस्फेरिक, स्क्वायरएज लेंस से मात्र 2500 रूपये में करावें। ऑपरेशन के बाद एक माह की दवा मुफ्त और 250 से 400 रूपये में चश्मे की सुविधा। मरीज एवं एक साथी को खाने एवे रहने की सुविधा मुफ्त।

2 आधुनिक फेको मशीन द्वारा मोतियाबिन्द का ऑपरेशन–

50 रूपये के पर्चे पर सभी जांच के बाद आधुनिक इनफीनिटी फेको मशीनों द्वारा फोल्डेबुल इण्डियन लेंस के साथ सभी खर्चे सहित। (1) हाइड्रोफिलिक लेंस से 5000 रूपये में (2) हाइड्रोफोबिक लेंस से 8500 रूपये में।

3. फोल्डेबुल विदेशी हाइड्रोफोबिक लेंस के साथ सभी खर्चे सहित (1) मात्र 11000 रूपये में लेंस (2) मात्र 14000 रूपये में सिंगल पीस लेंस से (3) मात्र 16000 रूपये में लेंस नेचुरल एलो से।

4. नान कान्ट्रेक्ट टोनोमीटर मशीन द्वारा आंख के प्रेशर (टेन्शन) की जांच फ्री में।

5. ऑटोरिफ्रेक्टो मीटर मशीन द्वारा चश्मा जांच फ्री में।

6. ए–स्कैन द्वारा लेंस के पावर की जांच मात्र 100 रूपये में।

7. याग लेजर द्वारा आंख की झिल्ली काटने की सुविधा मात्र 500 रूपये में।

8. लेंस स्टार मशीन से लेंस के पावर की जांच 500 रूपयें में । फेको आपरेशन मे फ्री।

9. ओ.सी.टी. मशीन की सुविधा 500 रूपये में उपलब्ध।

अन्य सुविधाएं-

1. नाक, कान एवं गला रोग ओ.पी.डी. एंव ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध। (दिन– गुरूवार व शनिवार)
2. जनरल– ओ.पी.डी. एवं आपरेशन की सुविधा उपलब्ध। (दिन–बुधवार, शुक्रवार)। लेप्रोस्कोपिक सर्जरी की सुविधा उपलब्ध
3. हड्डी रोग– ओ.पी.डी. एवं आपरेशन में सी–आर्म व डिजिटल एक्स–रे की सुविधा। (दिन–मंगलवार)
4. महिला रोग ओ.पी.डी. एवं आपरेशन की सुविधा उपलब्ध। (दिन– शनिवार)
5. दांत रोग के जांच एवं उपचार की सुविधा उपलब्ध।
6. होमियोपैथिक चिकित्सक (सोमवार से शनिवार)
7- आयुर्वेदिक चिकित्सक (मंगलवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार)

मोतियाबिन्द क्या है ?

प्राकृतिक लेंस का झाई युक्त (धुंधला) होना मोतियाबिन्द कहलाता है। यह उम्र बढ़ने के साथ ही एक सामान्य प्रक्रिया है। बच्चों में मोतियाबिन्द के अलग–अलग कारण होते हैं। कोई इलाज, दवा अथवा किसी प्रकार का खान–पान मोतियाबिन्द का बनना नहीं रोक सकता है। प्राकृतिक लेंस के स्थान पर कृत्रिम लेंस लगाना ही इसका कारगर समाधान है।

मोतियाबिन्द के लक्षण-

1. बिना दर्द के धुधला दिखना
2. तेज रोशनी में चमक व दृष्टि का कम होना
3. एक वस्तु को दो जगह देखना
4. रंगों की चमक कम होना
5. बार-बार चश्में का पावर बदलना

इलाहाबाद गोपीगंज ← माधोसिंह जी0टी0 रोड औराई → वाराणसी

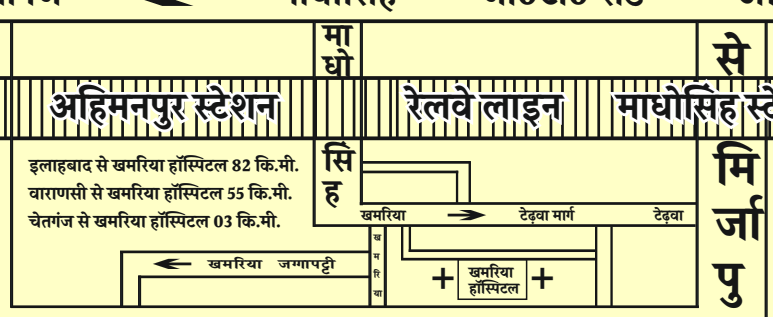

इलाहाबाद से खमरिया हॉस्पिटल 82 कि.मी.
वाराणसी से खमरिया हॉस्पिटल 55 कि.मी.
चेतगंज से खमरिया हॉस्पिटल 03 कि.मी.

औराई से खमरिया हॉस्पिटल 05 कि.मी. दूर
माधोसिंह रोड से खमरिया हॉस्पिटल 03 कि.मी. दूर
अहिमनपुर से खमरिया हॉस्पिटल 01 कि.मी. दूर

नोट: अभी तक अस्पताल की अन्यत्र कोई भी शाखा नहीं है